3.3.3 Papers Published in Conference Proceedings

Papers Published in Conference Proceedings

S. No	Title of the Paper	Name of theAuthor	Department of the teacher	Name of the Conference
1.	Kabirdas ki samajik chetana	Ms. Sangita	Department of Hindi	One Day National level Conference on Kabir our Basaweshwar ek thulanathmak adhyayen.
2.	Systematic Literature review of Entrepreneurship through use of ICT enabled Education Learning	Ms. Nisha Joseph	Department of Business Administration	National Conference on Computational Science and It's Applications.
3.	Role of ICT in Work Life Balance of Teachers (Higher Education perspective)	Sr. Kulandai Yesu	Department of Business Administration	National Conference on Computational Science and It's Applications.
4.	The Role of Entrepreneurship Education Programme on Intention and self-efficacy of Community College Students	Ms. Nisha Joseph	Department of Business Administration	National Conference on Economic Prosperity & Sustainable Development Goals.
5.	Geetha nagabhushan ravara katha sahithyadhallina samajkathe	Dr. Prameela	Department of Kannada	kannada sahithya-Mahila chithanegalu.
6.	Antim Dashak Ki Dalit Kahaniyon Me Anchalikta	Ms. Sangita	Department of Kannada	One Day National Level Multi-Language Conference on Language and Identity.

कबीर और बसवेश्वर

एक तुलनात्मक अध्ययन

संपादक

डॉ. एस. ए. मंजुनाथ

उप-संपादक

डॉ. ए. वी. सूर्यवंशी डॉ. विनय कुमार यादव

Kabeer Aur Basaveshwar : Ek Tulanatmak Adhyayan
(A Collection of Articles on Kabeer and Basaveshwar)

मूल्य : नौ सौ पचास रुपये मात्र
Price : Nine Hundred fifty only

पुस्तक	:	कबीर और बसवेश्वर : एक तुलनात्मक अध्ययन
संपादक	:	डॉ. एस. ए. मंजुनाथ
Editor.	:	Dr. S.A Manjunath
उप संपादक	:	डॉ. ए.वी. सूर्यवंशी, डॉ. विनय कुमार यादव
Sub Editor.	:	Dr. A.V. Suryavanshi, Dr. Vinay Kumar Yadav
प्रकाशक	:	**विकास प्रकाशन** 311 सी., विश्व बैंक, बर्रा, कानपुर- 208027
©	:	लेखक
संस्करण	:	प्रथम, 2023 ई.
आवरण-सज्जा	:	छपाईघर, ब्रह्मनगर, कानपुर
शब्द-सज्जा	:	शुभी कम्प्यूटर, कानपुर
मुद्रक	:	छपाईघर, कानपुर
मूल्य	:	950/-
I S B N	:	978-93-95922-48-7

29. संत कबीरदास की सामाजिक चेतना 182
रीमा देवी
30. संत कबीर और महात्मा बसवेश्वर के साहित्य में समानता का संदेश 189
डॉ. महांतेश आर अंची
31. कबीरदास और बसवेश्वर : तुलनात्मक अध्ययन 193
मलगौडा पाटील
32. युग प्रवर्तक कबीरदास 201
डॉ. नीतू तिवारी
33. कबीर व बसवेश्वर का अनभै साँचा 206
शिव कैलाश यादव
34. सामाजिक सुधार के प्रणेता महात्मा कबीरदास 212
डॉ. रमेश चव्हाण
35. कबीर और बसवेश्वर की भक्ति भावना और दार्शनिक विचार 215
राहुल लक्ष्मण क़ासार
36. बसवेश्वर के वचनों में सामाजिक दृष्टि 220
डॉ. मेहराजबेगम सैय्यद
37. कबीर का व्यक्तित्व एवं कृतित्व 225
लाडलेमशाक पी. नदाफ
38. युग प्रवर्तक कबीरदास 231
श्रीमती नयना जैन- डॉ. सुमन कौशिक
39. कबीरदास की सामजिक चेतना 236
संगीता
40. समाज सुधारक महात्मा बसवेश्वर 241
सागर देसले
41. कबीरदास एवं उनका कृतित्व 247
रूबी कुमारी
42. बसवेश्वर के साहित्य का विमर्श- 253
आशीष चिंडारिया
43. कबीर का व्यक्तित्व एवं कृतित्व 258
पद्मश्री चौगुले
44. कबीर के साहित्य में विविध विमर्श 264
अविनाश पाण्डेय

39
कबीरदास की सामाजिक चेतना

संगीता

पृथ्वी पर जब-जब धर्म की हानि होती है, तब-तब उसके उत्थान के लिए किसी संत-महात्मा या महापुरुष का अवतरण होता है। सतयुग से आज कलियुग तक यही होता आया है। तेरहवीं सदी के आखरी दशक जब मुस्लमान शासकों का धार्मिक-दमनात्मक रवैया अपने उत्कर्ष पर था। हिन्दू धर्म भी कुछ विद्वानों और कुलीन व्यक्तियों की जागीर बन गया था- ऐसे समय में किसी संत-महात्मा के अवतरण की जरूरत महसूस की जा रही थी।

कबीर को मूलतःवैक्तिक साधना का प्रचारक माना जाता है। इसलिए उन्हें शुद्ध रूप से समाज सुधारक नहीं माना जा सकता। डॉ. रामचन्द्र तिवारी का विचार है कि "वे समाज रचना के लिए किसी प्रकार के सुधारवादी आन्दोलन के पुरस्कर्ता न होकर मानव आत्मा की मुक्ति के लिए आध्यात्मिक संघर्ष करने वाले साधक थे।"

कबीर का जन्म कब हुआ, यह ठीक से ज्ञात नहीं है। मोटे तौर पर उनका जन्म 14वीं-15वीं शताब्दी में काशी वर्तमान समय का वाराणसी में हुआ था। एक मान्यता के अनुसार उनका जन्म सन 1398 में ज्येष्ठ मास की पूर्णिमा को ब्रह्ममुहूर्त के समय हुआ था।

कबीर की भाषा सधुक्कड़ी एवं पंचमेल खिचड़ी है। इनकी भाषा में हिंदी भाषा की सभी बोलियों के शब्द सम्मिलित हैं। राजस्थानी, हरियाणवी, पंजाबी, खड़ी बोली, अवधी, ब्रजभाषा के शब्दों की बहुलता है। ऐसा माना जाता है की रमैनी और सबद में ब्रजभाषा की अधिकता है तो साखी में राजस्थानी व पंजाबी मिली खड़ी बोली की।

भारत में जाति-व्यवस्था अत्यंत प्राचीनकाल से चली आ रही है, किन्तु मध्यकाल में इस व्यवस्था में अनेक विकृतियाँ पैदा हो गयीं। चार वर्गों के अंतर्गत कई जातियाँ और उपजातियाँ पैदा हो गई थी। डॉ. आशीर्वादी लाल का कथन है "हमारे देश के इतिहास में किसी भी युग में मानव जीवन का इतना नृशंसतापूर्ण नाश नहीं किया गया

जितना तुर्क अफगान शासन के इन ढाई सौ वर्षों में।" शूद्रों की दयनीय स्थिति का लाभ मुसलमानों को मिला। कुछ डर से, कुछ लोभ से बहुत से शूद्र मुसलमान हो गये। हिन्दुओं में पेशे के अनुसार जातियों का निर्माण हो गया था। ब्राह्मणों का समाज में सम्मान पूर्ण स्थान था, किन्तु उनका परम्परागत गौरव क्षीण हो रहा था। वे पूजा-पाठ के साथ आर्थिक विकास की ओर भी ध्यान देने लगे थे। ब्राह्मणों की तरह क्षत्रियों को भी उच्च स्थान प्राप्त था। इनका मुख्य कार्य था युद्ध करना। इनमें भी अनेक उपजातियाँ बन गयी थीं। राजवंशीय क्षत्रिय अधिक सम्मानित थे। पूर्व मध्यकालीन समाज में 'कायस्थ' नाम की नई जाति विकसित हुई। जो व्यक्ति लिपिक के पद पर कार्य करते थे उन्हें 'कायस्थ' कहा जाता था। वैश्य मुख्य रूप से वाणिज्य और व्यवसाय में संलग्न थे, ये कृषि तथा उद्योग-धन्धों में भी रुचि रखते थे। समाज में निम्नतम स्थान था शूद्रों का। इनमें एक वर्ग ऐसा था जिसे छूना भी पाप था, ये जातियाँ प्रायः नगर तथा गाँव के बाहर रहती थीं। मध्यकाल में आदमी की खरीद फरोख्त का भी धन्धा था। धनवान लोग असंख्य दास दासियाँ खरीद और रख सकते थे। इन्हें पशुओं की तरह खरीदा और बेचा जाता था। मालिक की सेवा तथा मनोरंजन इनका मुख्य कार्य था। कुछ दासों ने अपनी योग्यता और प्रतिभा से उच्च स्थान भी प्राप्त कर लिया था।

मध्यकाल में स्त्रियों की स्थिति धीरे-धीरे गिरती जा रही थी। उनमें पर्दा प्रथा का प्रचलन हो गया था। ये मुख्यतः मनुष्य के लिए उपभोग की वस्तु हो गयी थीं। सती-प्रथा जोरों पर थी। उसे पति की मृत्यु के पश्चात उसके साथ चिता में जलकर शरीर त्याग करना पड़ता था। राजपूत नारियों में जौहर की प्रथा चल गयी थी।

कबीर के समय सिद्धों और नाथों की साधना तो चल ही रही थी सूफियों का भी भारत किया। रामानुजाचार्य, निम्बार्काचार्य, बल्लभाचार्य, मध्वाचार्य आदि दार्शनिकों ने अपने में प्रवेश हो गया था। सूफी मत की उदारता ने लोगों को इस्लाम की अपेक्षा अधिक आकर्षित विचारों से भक्ति के विकास के लिए मार्ग प्रशस्त कर दिया था। भक्ति-आन्दोलन के अग्रदूत रामानन्द की समानता की उद्घोषणा से दलितों में जागरण की लहर पैदा हो गयी थी।

अत्यन्त संक्षेप में कबीर के समय की राजनीतिक, सामाजिक और धार्मिक परिस्थितियों का अवलोकन करने के बाद उनसे जुड़ी हुई समस्याएँ स्वतः उभर कर सामने आ जाती हैं। तत्कालीन राजनीति से कबीर अप्रत्यक्ष रूप से ही प्रभावित होते हैं। तत्कालीन सामाजिक जीवन पर भी राजनीतिक उथल-पुथल का अप्रत्यक्ष रूप से ही प्रभाव पड़ रहा था। राजा को ईश्वर का पर्याय मानने वाली जनता के सामने अब ऐसे राजागण आ गये थे जो उनके ईश्वर के लिए घातक थे और उनकी युग-युग से

प्रतिबद्ध आस्थाओं के भी प्रभंजक थे। राजा की शासन व्यवस्था तथा कर-व्यवस्था से सामान्य जनों का भौतिक जीवन थोड़ा-बहुत बेहतर हो सकता था। कुछ सुल्तानों ने जनहित का यथासंभव प्रयत्न भी किया, किन्तु भाग्यवादी एवं धर्मप्रवण भारतीयों पर उसका असर लगभग नगण्य रहा। धार्मिक कट्टरता एवं बर्बरता से हुए भयानक घाव को लोक कल्याण का हल्का मलहम भर नहीं पाता था। गद्दी हथियाने के लिए होने वाले युद्धों के कारण धन-जन की काफी हानि होती थी। राजनीतिक और धार्मिक दोनों क्षेत्रों में हिंसा का दौर चल रहा था। इसीलिए कुछ धर्मों के द्वारा प्रचारित अहिंसा का आदर्श सामाजिक धरातल पर एक मूल्य के रूप में प्रतिष्ठित हो रहा था। कबीर हर प्रकार की हिंसा का विरोध करते हैं विशेषतया धर्म और स्वाद से सम्बन्धित हिंसा का। ब्राह्मणों द्वारा किये जाने वाले बलि-कर्म की ओर संकेत करते हुए कबीर कहते हैं-

"जीव बधत अरु धर्म कहत हौ, अधरम कहाँ है भाई।
आपन तौ मुनिजन है बैठे, कासनि कहौं कसाई।।"

कबीर की वाणी में तत्कालीन मानवीय संवेदना बड़ी व्यापकता और समग्रता से ध्वनित है। उनका संकल्प राजा-महाराजाओं की लड़ाइयों का ब्यौरा तथा उनके मिथ्या प्रस्तुत करना नहीं है, किन्तु किसी भी सशक्त इतिहासकार से भी अधिक वे अपने समसामयिक सांस्कृतिक जीवन को अभिव्यंजित करते हैं। वे एक जागरूक रचनाकार की तरह अपने सम्पूर्ण अनुभवों को अपनी रचना में पुनः अर्जित करते हैं। उनके रूपकों और उपमानों में मध्ययुग साकार हो जाता है। मध्यकाल में दुर्ग का बड़ा महत्त्व था। राजा इसी में रहता था लेकिन सशक्त फौजों के द्वारा घिर जाने पर रखवाले भाग जाते थे और स्वामी पकड़ लिया जाता था।

कबीर मानवतावादी विचारधारा के प्रति गहरी आस्था रखते थे। वह युग अमानवीयता का था इसलिए कबीर ने मानवता से परिपूर्ण भावनाओं एवं संवेदनाओं को जागृत करने के लिए निरंतर प्रयास किये। वे समाज में जातिप्रथा का विरोध करके समाज से सभी कुरीतियों को दूर करना चाहते थे।

"एक बूँद एकै मल-मूत्र, एक चाम एक गूदा।
एक जाति थे सब उत्पन्ना, कौन बाभन कौन सूदा।।"

कबीर की दृष्टि में राम और रहीम एक थे। अलग-अलग लोग अलग-अलग तरह से उस एक ही ईश्वर का नाम लेते हैं। धर्म के आधार पर लोगों को बाँटने का वे विरोध करते थे। मूर्ति-पूजा का भी वे कड़ा विरोध करते हुए कहते थे-

"पाहन पूजे हरि मिलें तो मैं पूजौं पहार ।
ता ते तो चाकी भली, पीस खाय संसार।।"

वे लोगों को अहिंसा, सत्य, सदाचार और सरलता की शिक्षा देते थे। मध्यकाल में जब जन-सामान्य कुलीन लोगों और आततायी शासकों के जुल्मों तले सिसक रहा था, ऐसे दौर में कबीर ने अपने उपदेशों की अमृत वर्षा से लोगों को अपनी ओर आकृष्ट किया और उनके जख्मों पर शब्दों का मरहम लगाया। संसारचक्र में लोग कोल्हू के बैल की तरह पीसे जा रहे थे तब कबीर का हृदय रो उठा-

"चलती चक्की देख के दिया कबीरा रोय।
दो पाटन के बीच में साबुत बचा न कोय।।"

उन्होंने हिंदू-मुसलमान के भेदभाव को दूर करने के लिए निर्गुण भक्ति-पंथ प्रचलित किया, जहाँ ऊँच-नीच, स्त्री-पुरुष, जाति-पाँति, अमीर-गरीब आदि का भेदभाव नहीं था। वे मानवतावादी थे। उनका कहना था कि चित्त को शांत रखकर ईश्वर की भक्ति से सभी कष्टों से छुटकारा पाया जा सकता है। जैसे गर्भकाल में नौ महीने तक भगवान् हमारी रक्षा और पालन करते हैं, वैसे ही हर स्थिति में वे भक्त के साथ होते हैं।

जैसे जल में रहकर मछली कभी प्यासी नहीं रह सकती, वैसे ही घट-घट में वास करने वाले ईश्वर के होते मनुष्य बेसहारा नहीं हो सकता। उसे अपने अंतर्मन में ईश्वर को अंदर ही खोजना चाहिए और जब वह एक बार भीतर के ईश्वर को पा लेगा तो उसका जीवन आनंद से भर उठेगा। इसलिए वे कहते हैं-

"कस्तूरी कुंडल बसै, मृग ढूँढ़े वन माहिं।
ऐसे घट-घट राम हैं, दुनिया देखे नाहिं।।"

कबीर के समय के समाज में दुर्बलों की दशा अत्यंत दयनीय थी। वे कुलीन वर्ग के गुलामों जैसा जीवन जीने को विवश थे। इसी सामाजिक विषमता से कबीर के हृदय में ये उद्‌गार उपजे। उन्होंने कुलीनों को सावधान करते हुए कहा-

"दुर्बल को न सताइए, जाकी मोटी हाय ।
बिना जीव की साँस सो, लौह भसम होइ जाय।।"

इतना ही नहीं, कुलीन और उच्च वर्ग को चेतावनी देने के बाद वे नैतिक रूप से झकझोरते भी हैं। यथा-

"बड़ा हुआ तो क्या हुआ, जैसे पेड़ खजूर।
पंथी को छाया नहीं, फल लागे अति दूर।।"

कबीर वर्ण-व्यवस्था के कट्टर विरोधी थे क्योंकि वे स्वयं एक ऐसे परिवार में पले-बढ़े थे, जो तत्कालीन समाज में अछूत कहलाता था, अतः इस व्यवस्था के दंश को उन्होंने स्वयं झेला था। इसलिए वे लोगों को समझाते थे कि जन्म से सब मनुष्य समान हैं। भगवान् ने अपनी तरफ से ऐसी कोई व्यवस्था नहीं की है। वे जात-पाँत से कर्मों

को श्रेष्ठ मानते थे-

"ऊँचे कुल क्या जननियाँ, जे करणी ऊँच न होई।
सोवन कलस सुरै भरया, साधु निंदा सोई।।"
"जाति न पूछो साधु की, पूछ लीजिए ज्ञान।
मोल करो तलवार का, पड़ा रहन दो म्यान।।"

कबीर सत्य-विचार को जीवन के लिए अहम मानते थे। वे कहते थे, अगर आपके विचारों में सत्यता नहीं है तो संध्या, व्रत, तप, तीर्थ, यज्ञ, हवन, धार्मिक कर्मकांड, नमाज, अरदास आदि करने-कराने का कोई फायदा नहीं हो सकता। तभी वे कहते हैं-

"साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप।
जाके हिरदय साँच है, ताके हिरदय आप।।"

इस प्रकार हम देखते हैं कि कबीर की शिक्षा, उपदेश और संदेश व्यर्थ नहीं गए। उनके पदचिह्नों पर चलकर अनेक साधारण लोग महान् बने। उनकी रचनाओं में अनेक ऐसी नीतिपूर्ण बातें हैं जो मनुष्य को सही मार्ग पर चलने में सहायक सिद्ध होती है।

सन्दर्भ

1. ओमप्रकाश वाल्मीकि : मुख्यधारा और दलित साहित्य
2. एम फ़िरोज खान : नई सदी में कबीर
3. कबीर दोहावली : सं. नीलोत्पल
4. कबीर ग्रंथावली : रामकिशोर शर्मा

★

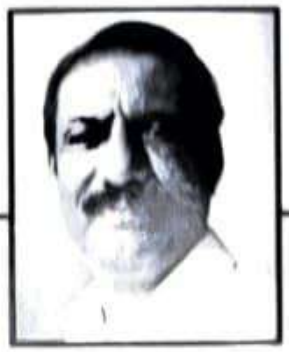

डॉ. एस. ए. मंजुनाथ

कर्नाटक के जिला हासन के श्रवणबेलगोला में जन्म । माता–पिता स्व. श्रीमती भाग्यम्मा और स्व. अंदानिगौड़ा । मैसूरु विश्वविद्यालय से बी. कॉम, एम.ए. और पी.एच–डी, आगरा के केंद्रीय हिन्दी संस्थान से हिन्दी पारंगत (बी.एड) और इलाहाबाद के साहित्य सम्मेलन से हिन्दी साहित्यरत्न प्राप्त । "नरेंद्र कोहली का व्यंग्य साहित्य : एक अध्ययन" विषय पर शोध कार्य । 1992 से हिन्दी अध्यापन के कार्य में संलग्न और वर्तमान में पोंपै कॉलेज, ऐकला, मंगलूरु में हिन्दी प्राध्यापक के रूप में सेवारत । "नरेंद्र कोहली का व्यंग्य साहित्य : एक अध्ययन", "हिन्दी के व्यंग्य सर्जक नरेंद्र कोहली", "हिन्दी व्यंग्य साहित्य एक समीक्षात्मक अध्ययन", "हिन्दी में व्यंग्य विमर्श एवं नरेंद्र कोहली", "सुबोध हिन्दी व्याकरण", "प्रयोजनमूलक हिन्दी", "सरल हिन्दी व्याकरण और रचना" और "नवीन हिन्दी व्याकरण" विषय पर पुस्तक प्रकाशित हैं । "मार्गदर्शी", "हिन्दी मंगला", "विहारा वाहिनी", "विहारा वाणी", "आधुनिक हिन्दी काव्य : एक अवलोकन","विहारा मंगला", "हिन्दी कहानी और वर्तमान समाज", "अमृत काव्य धारा" और "भारतीय संत साहित्य परंपरा" नामक पुस्तकों का संपादन कार्य संपन्न है। हिन्दी और कन्नड़ दोनों भाषाओं में "भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कृत साहित्यकार" नामक पुस्तक प्रकाशनाधीन है। भगवानदास मोरवालजी का एक चर्चित उपन्यास "शकुंतिका" का कन्नड़ भाषा में अनूदित और पुस्तक प्रकाशित है । कुल मिलाकर 25 पुस्तकें प्रकाशित हैं। राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी में लगभग 80 शोध पत्रों की प्रस्तुति और प्रकाशित है। तीन पी–एच.डी और सात एम. फिल शोधकार्य में मार्गदर्शन। लगभग 15 राष्ट्रीय हिन्दी कार्यशाला एवं संगोष्ठियों का आयोजन। अखिल भारतीय हिन्दी महासभा के राष्ट्रीय सचिव और शोध जर्नल के संपादक मंडल के सदस्य है। वर्तमान में कर्नाटक राज्य विश्वविद्यालय महाविद्यालय हिन्दी अध्यापक संघ, बेंगलूरु, कर्नाटक के अध्यक्ष, मंगलूरु विश्वविद्यालय कॉलेज अध्यापक संघ (अनुदान) के उपाध्यक्ष और कर्नाटक राज्य विश्वविद्यालय कॉलेज अध्यापक संघ, बेंगलूरु के सह सचिव है । Email: manjusp066@gmail.com मो. 9449548886

Also available at : Flipkart amazon

विकास प्रकाशन, कानपुर
311 सी, विश्वबैंक बर्रा, कानपुर-208027
शोरूम : 110/138 मिश्रा पैलेस, जवाहर नगर, कानपुर-12
मोबाइल : 9415154156, 9450057852
E-mail : vikasprakashankanpur@gmail.com
vikasprakashanknp@gmail.com
Website : www.vikasprakashan.com

₹ 950.00

PROCEEDINGS OF THE NATIONAL CONFERENCE

COMPUTATIONAL SCIENCE AND ITS APPLICATIONS

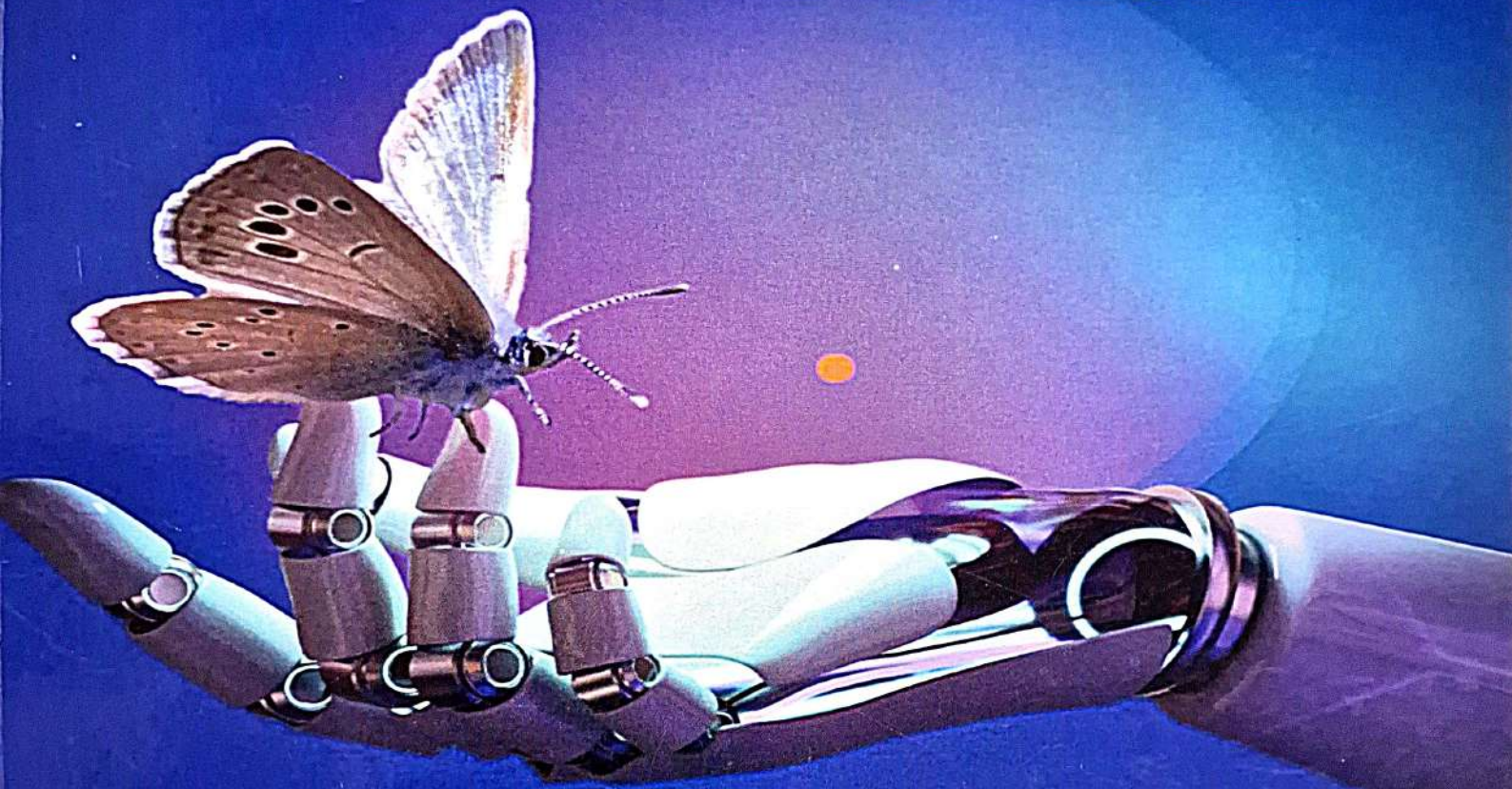

Organized by

• Department of Computer Applications •

St. Anne's Degree College for Women

Halasuru, Bengaluru-560008

ISBN: 978-81-952814-6-6

13.12.2023

ISBN: 978-81-952814-6-6

Copyright@2024, St. Anne's Degree College for Women

No part of this publication may be reproduced or transmitted in any form by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or any information storage and retrieval system, without permission in writing from the copyright owners.

Disclaimer

The authors are solely responsible for the contents of the papers complied in this volume. The publishers or editors do not take any responsibility for the same in any manner.

Published By

St. Anne's Degree College for Women
Permanently Affiliated to Bengaluru City University
Recognized by UGC under section 2(f), Accredited with 'A' Grade by NAAC,
An ISO 9001:2015 Certified Institution
23, Cambridge Road, Halasuru, Bengaluru-560008

First Edition: 2024

© **St. Anne's Degree College for Women, Halasuru, Bengaluru**

Computational Science and Its Applications: National Conference Proceedings

December 13, 2023, St.Anne's Degree College for Women, Halasuru, Bengaluru -560008

Contents

Preface

Secretary's Message

Principal's Message

Expert Review

Sl No.	Title	Page No.
1.	**Palm Print Biometric Recognition and Deployment** ***Ms. S. Selvarani,*** *Assistant Professor, Department of Computer Applications, Fatima College (Autonomous), Madurai and Research Scholar (Ph.D – Part Time), Department of Computer Science & Applications, The Gandhigram Rural Institute, Gandhigram, Dindigul*	1
2.	**Digital Imaging and Communications in Medicine - DICOM Exploration using Image Steganography and Hashing** ***Ms. K. P. Maheshwari,*** *Research Scholar, Department of Computer Science & Applications, The Gandhigram Rural Institute (DTBU), Dindigul and Assistant Professor, Department of & Applications, Fatima College, Madurai.*	8
3.	**Systematic Literature Review of Entrepreneurship Education through use of ICT enabled experiential Learning** ***Ms. Nisha Joseph,*** *Research Scholar, Christ (Deemed to be) University, Bangalore-560029.* ***Dr Greta D'Souza,*** *Head of the Department, School of Education, Christ (Deemed to be) University, Bangalore*	20
4.	**Role Of ICT In Work-Life Balance of Teachers** (Higher Education Sector's Perspective) ***Sr. Kulandai Yesu C,*** *Research Scholar at Annamalai University and Assistant Professor, Dept. of Business Administration, St. Anne's Degree College for Women, Bengaluru* ***Dr. G. Latha****, Associate Professor, Dept. of Business Administration, Annamalai University*	31
5.	**A study on E-commerce start-ups and challenges in Bengaluru** ***R. Kavya,*** *Research Scholar, Department of Commerce and Management, Jain University, Bengaluru and Assistant Professor, Department of Business Administration, St. Anne's Degree College for Women, Halasuru*	38
6.	**Cryptography** ***Shaheda Baig,*** *II BCA, St. Anne's Degree College for Women, Halasuru*	45
7.	**Securing Land Records using Blockchain Technology** ***Ms. Afshan Rehman, Ms. Ambuja M, Mr. Vivek R Venkatesh,*** *Bengaluru City University, Bengaluru*	50

Systematic Literature Review of Entrepreneurship Education through use of ICT enabled experiential Learning

Ms Nisha Joseph

Research Scholar, Christ (Deemed to be) University, Hosur Road Bangalore-560029. Mobile: 9449404724, E-mail-nisha.joseph@res.christuniversity.in

Dr Greta D'Souza

Head of the Department, School of Education, Christ (Deemed to be) University, Hosur Road, Bangalore- 560029, E Mail- greta.dsouza@christuniversity.in

Abstract

Methods of education and classroom engagement has not kept pace with changing technology, but it is imperative that remarkable change is becoming more apparent in the academic field. The other significant determining factor of success in education is motivation which is in line with classroom engagement. Moreover, based on the constructivist approach, experiential learning (EL) as a new method in entrepreneurship education. A learner-centric pedagogy is adopted as the gains of ICT is being realised. The result of ICT and experiential learning contributions to improving the value of entrepreneurship education in higher education and vocational education is making it less conventional which centres on developing abilities, and experiences.

Empirical evidence suggests that technology can augment experiential learning through three mechanisms: preserving the event for later reference, establishing a virtual community involving educators and students, and opening up new paths for the community to pursue its objectives. The literature review makes an effort to consider the role of ICT and experiential learning with respect to entrepreneurship education on students' classroom engagement and motivation by inspecting its backgrounds and values.

Keywords: ICT, classroom engagement, experiential learning, entrepreneurship education.

I. Introduction

Formalized instruction designed to advance small business development, business creation, and entrepreneurship awareness is known as entrepreneurship education. It aims to give students the information, abilities, and drive to support successful entrepreneurship in a range of contexts. There are programs at all educational levels that teach entrepreneurship, ranging from graduate university courses to elementary or secondary schools. It encompasses a broad range of subfields, including curriculum and instruction, policy and governance, maker education, lifelong learning and skill development, social entrepreneurship, innovative

education, and technical and vocational education and training.

Entrepreneurship education has appositive impact on the innovations and company creation. Participation in training and entrepreneurship education positively influences entrepreneurial orientation and skills. It strengthen the capacity and competencies, making students more autonomous and facilitating creation of new businesses (Anderson Galvão, 2017). A combination of experimental learning, skill development in entrepreneurship education can strategically change the thinking of individuals towards establishing an entrepreneurial venture. There is a positive link between entrepreneurial education and entrepreneurial intentions which confirms the importance of further enhancing and developing of programmes (Mihaela Mikic, 2018).

The literature now emphasises more nuanced and output-oriented aspects of entrepreneurship education, such as intentions, motivation, attitude, and behaviour, rather than the more conventional methods of teaching entrepreneurship. Entrepreneurial intents, which are strongly tied to practice, innovation, and entrepreneurial learning, are the most popular issue among scholars and have been the subject of more published articles.

Education must be adapted to the needs and characteristics of students with a focus of developing competencies. Therefore, it is important to conceive new models and methodologies to articulate key global orientations and contextualised based principles to teach entrepreneurship competencies. (Laura Alvarez Marques, 2012).

1.1 Entrepreneurship Education : Skills and Methodologies

Entrepreneurial pedagogy intends to prepare students to learning in and for the outside world. So, teaching models that encourage students to continue learning throughout their experience and to identify and build life opportunities are essential. In this context, the possibility of "learning by doing" becomes important. The World Economic Forum (WEF, 2009), for instance, describes some examples of experiential learning methodologies and stresses the importance of learning outside the class and through real context approaches. This experiential learning gives students an active role, in opposition to the traditional "listen and take notes" role (Garavan & O'Cinnelde, 1994). In this perspective it's essential to prepare them to be able to think for themselves, considering the possibility to learn through "errors" (the perspective of the "good error"), encouraging the use of feelings, attitudes, and values, also when dealing with conflict situations. So, they must employ different and articulated learning styles: concrete experience, reflective observation, abstract conceptualization and active experimentation (see Figure 1).

Figure 1: Conceptual framework of learning styles and pedagogical technique

Stage I - Feeling III.

Active / applied Skills and attitudes changes (Role-playing; management simulation; structured exercises; process discussion; group tasks; diaries; field projects, etc)	II. Reflexive / Applied Changes under consideration (movies; applied speech; dialogue; limited discussion; case studies; examination of problems; programmed instruction)

Active experience Stage IV – Doing Reflective observation Stage II –Observing IV. Active / theoretical Change in the understanding (focused learning groups; argumentative discussion; experiences and research; suggested readings; analysis of articles)	I. Reflexive / theoretical Knowledge changes (lectures on theories; required reading; communications; programmed instruction / conceptualizations; theoretical articles; content examination)

Adapted from Randolph & Posner, 1979, as quoted in Bucha 2009: 99.

The success of learning process is due to practical, active, dynamic methodologies allied to programme's structure and curriculum which gives students a new perspective on learning and future life, since they learn useful skills and competencies for the future. Over the past decade innovations in higher education has include the use of ICT(information and Communication Technology) and development of new tools and technology for accessing the content and skills of entrepreneurship courses.

The fact that technology has simply been introduced in learning is not adequate (Sulistyanto et al., 2023). Many questions have emerged, particularly related to what teachers should know to properly integrate technology into learning, and several studies have attempted to provide answers (Durdu & Dag, 2017; Koehler et al., 2013; Lee & Kim, 2014; Mishra, 2019). Therefore, technological, pedagogical and content knowledge has been introduced as a conceptual framework for knowledge-based teaching of entrepreneurship.

3. Objectives of the Study

The focus of this literature review study is as follows.

i) To identify the context emphasized in the research that studies entrepreneurship education.
ii) To identify the innovative technological resources implemented during training process of entrepreneurship education.
iii) To identify the emerging technologies that have been incorporated in training for entrepreneurship.

To achieve these objectives, a review of 33 empirical research articles and systematic reviews on innovative teaching models or methods for entrepreneurship found in Scopus and Google scholar databases was done. Analysing the existing research on the most frequently used models or methods and the technological innovations for its implementation in education.

The following section discusses the method used for analysing and systematizing the data. Then the results are presented to answer each of the questions raised. The article closes with conclusions to explain the practical usefulness of the main findings about the innovative models used in entrepreneurship training using ICT, the management gaps in the process of entrepreneurship training, the implication for future research and the limitations presented in this literature review.

4. The Systematic Review Processes

This systematic study used two popular and reliable databases, namely Scopus and Google, which contain tens of thousands of technical and scientific papers, books, reports and other materials. This systematic review was carried out in four stages. In the first stage, using the predetermined keywords, we obtained a total of 196 articles from the two databases (n ¼ 82 - Scopus; n ¼ 114 – Google Scholar). In this case, for the keyword "Technological Pedagogical Content Knowledge", we used two common keywords, namely "Entrepreneurship education" and "ICT".In the second stage, the 196 articles were screened The inclusion and exclusion criteria used in the systematic review are presented in Table 2. In the last stage, we performed an analysis to answer the research questions. The 33 articles selected for the systematic review were analysed using PRISMA protocol flow chart.

3.1. Methodology

In this study a qualitative analysis was carried out through a systematic literature analysis in order to identify the use of information and communication technology in entrepreneurship education of undergraduate students. The study was conducted in three stages: data collection, systematic literature review and analysis. Systematic Literature Review and analysis has emerged as an essential research tool, providing valuable insights into the publication output of authors, institutions, and nations. It enables researchers to identify trends, map research areas, and track the impact of research publications. Each of these techniques is used to extract meaningful insights from citation data, and how they can be used to evaluate research output.

The data search was carried out with the help of Scopus and google scholar database. The number of articles published in 2014-2023 reference period is 196 articles which demonstrates high interest in the research topic. Out of these 162 were excluded based on the inclusion and exclusion criteria. In the third stage, the remaining articles were carefully examined. Only 33 articles were selected for further analysis. Most of the articles were excluded for various reasons, most commonly because they were duplicates, The search was delimited to "articles" in the "English" language, they did not use the predefined keywords in the main body, they were not scientific articles (we excluded the following categories of documents: conference proceedings, books, book reviews, magazines, short surveys, short communications, correspondences, newsletters, discussions, product reviews, editorials, publisher's notes, and erratum), they only used the term "Information technology" in the reference, or they did not present discussion on entrepreneurship education. The systematic literature review (SLR) procedure was guided by the following research questions (RQs): RQ1: What are the research characteristics, in terms of year, country and subjects? RQ2: What kind of technology is used in the entrepreneurship education curriculum? RQ3: What is the readiness of the subjects to use technology in entrepreneurship education. In this study, PRISMA (Preferred Reporting Items for Systematic Review and Meta-Analysis), which used databases (Scopus and Google Scholar) to conduct a systematic review based on some keywords

("Entrepreneurship education " and "ICT"). SLR is a method that can be used to find, select and critically assess relevant research, as well as to collect and analyse data from research to be presented in the form of a scientific work that is structured systematically and explicitly (Juandi, 2021). Meanwhile, for the keyword "Entrepreneurship Education", this study used a number of synonyms; based on a thesaurus and commonly used terms in previous research, several similar words related to entrepreneurship education were utilised, including entrepreneurship training and entrepreneurial mindset. SLR offers several benefits that can encourage researchers to conduct future studies based on the findings presented in previous publications (Kitchenham et al., 2009). To help ensure the quality and reproducibility of the review process, PRISMA has developed a standardised and peer-reviewed methodology that uses a list of best practices (Conde et al., 2020). The basic PRISMA components consist of identification, screening, eligibility and inclusion. 33 articles was read carefully to identify relevant themes or sub-themes. Afterwards, each article was thoroughly reviewed to collect appropriate additional information relevant to the research objectives. The flow of the screening and data analysis used in this study, which was based on a modified PRISMA protocol.

4. Result and Discussion

Characteristics of Entrepreneurship education using ICT in thirty-three publications published between January 2014 and 2023. For data synthesis, we used a form related to the three SLR study questions. We also elaborated classifications of possible answers so that graphical representations could be obtained at the conclusion of the process. The content analysis in this literature review was carried out according to Bauer(2000) and Brewerton and Millward (2001) in reference to qualitative techniques that allow inferences to be drawn. First, we organized the data by study themes and then, based on the interpretation, we determined the most significant data to answer the research questions. In addition, source triangulation was used to validate the data and to identify the answers to the different questions. To achieve reliability and avoid bias, three people were involved in reading the abstracts and identifying appropriate articles.

i) RQ1: What is the context in which research on entrepreneurship training is developed?

Over the last 15 years. This is evident from the distribution of research on ICT by region. Five continents were represented in the distribution of research on ICT in entrepreneurship education, namely Asia (20%), Europe (40%), North America (32%), South America (4%) and Australia (4%), as shown in Figure 3. Most of the studies found were from Turkey (7), followed by the United States (4), Costa Rica (3), and Malaysia (2). The countries with only one article were the Netherlands, Canada, Australia, Austria, Hong Kong, Spain, Brazil, the Philippines and Iran. The fact that Turkey produced the highest number of studies might be because of the success of the FATIH project (Ozudogru & Ozudogru, 2019). The Government initiatives have impacted the adoption of ICT in entrepreneurship education.

Figure 2- Table showing the percentage region wise publication

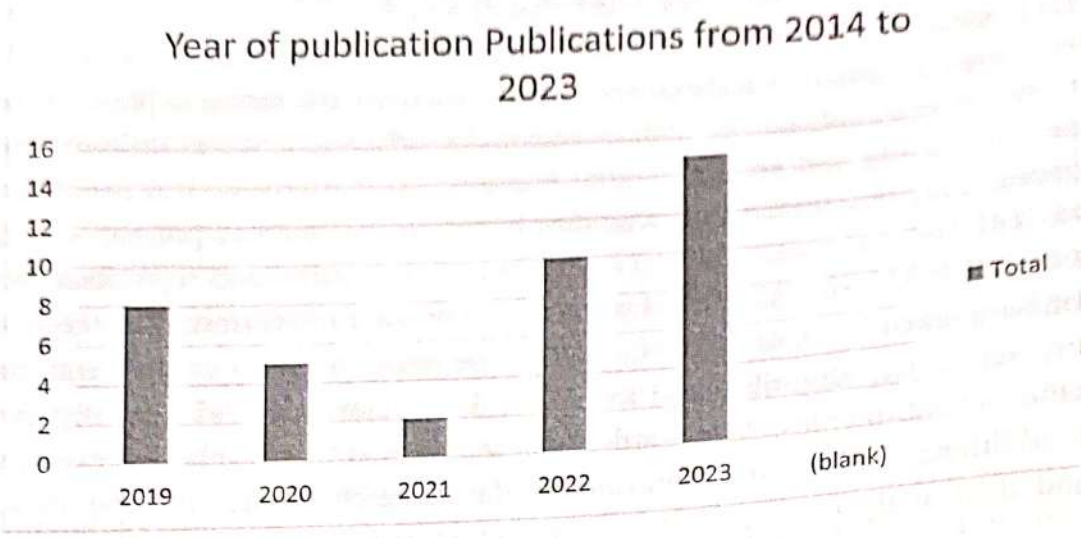

Analysis

Throughout this paper, various studies on ICT education and entrepreneurship education that were conducted between 2014 and 2023. Most of the studies were conducted in 2023(15 articles) and in 2019 (8 articles).The subjects of the studies varied, including . We found that most of the studies (n = 33 articles) on ICT and education focused on experiential learning. Based on the literature reviewed, we identified several factors that hinder the development of ICT in higher education entrepreneurship training. These include internal factors, such as lack of confidence in using technology, lack of motivation to learn new technology and resistance to change, as well as external factors, such as lack of institutional support, inadequate resources and limited access to technology. It is important to address these factors to effectively integrate technology into teaching and improve entrepreneurship.

Figure 3: Country wise publication

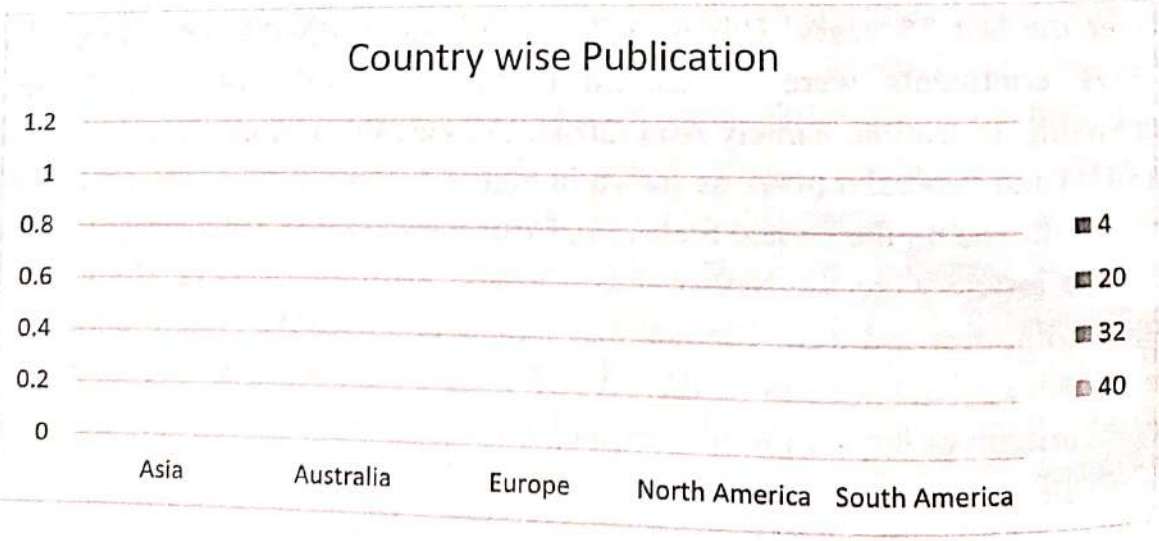

ii) RQ2: What are the different types of innovative technological resources used during training process of entrepreneurship education.

Figure 4: Pedagogy used in Entrepreneurship Education

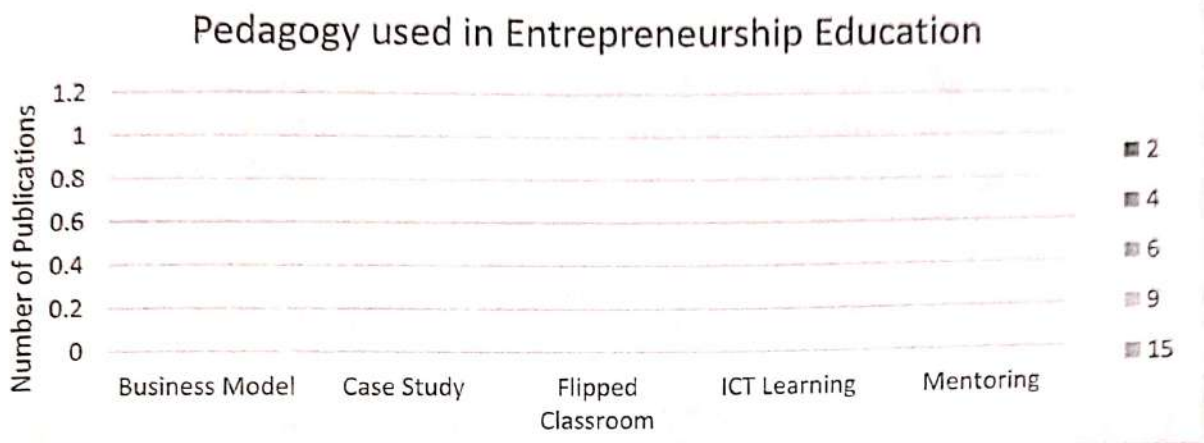

Analysis

The ability of subjects in entrepreneurship education to integrate technology is essential to developing effective and efficient teaching and learning processes for the present and the future. From the Figure 4, it can be seen that case study is used mostly in entrepreneurship education. They assist kids in adjusting to the potentially unfamiliar school setting once they leave their home milieu, in bringing the outside world into the classroom, and in moving the classroom itself. The selection of teaching methods in an educational process is greatly influenced by the beliefs of the teachers. (Alizadeh-Jamal et al., 2018). Teachers' beliefs about teaching shape their teaching strategy to influence students' mental and practical processes, helping them to better adapt to their living environment, behave more effectively and develop all aspects of their personality (Hofer & Pintrich, 1997). Entrepreneurship Education will not be able to effectively integrate technology into their teaching processes unless enough thought is directed towards the important question about how they should arrange and direct information and communication technology (ICT)-assisted activities as well as what concepts concepts they should use (Morales-López, 2019).

iii) RQ3: What are the emerging technologies adopted in entrepreneurship education?

Table 1

Emerging Technologies	Number of publications
E learning	3
Instructional Design	8
MOOC	4
Simulators	3
Grand Total	**18**

Figure 5 showing the emerging technologies in Entrepreneurship Education

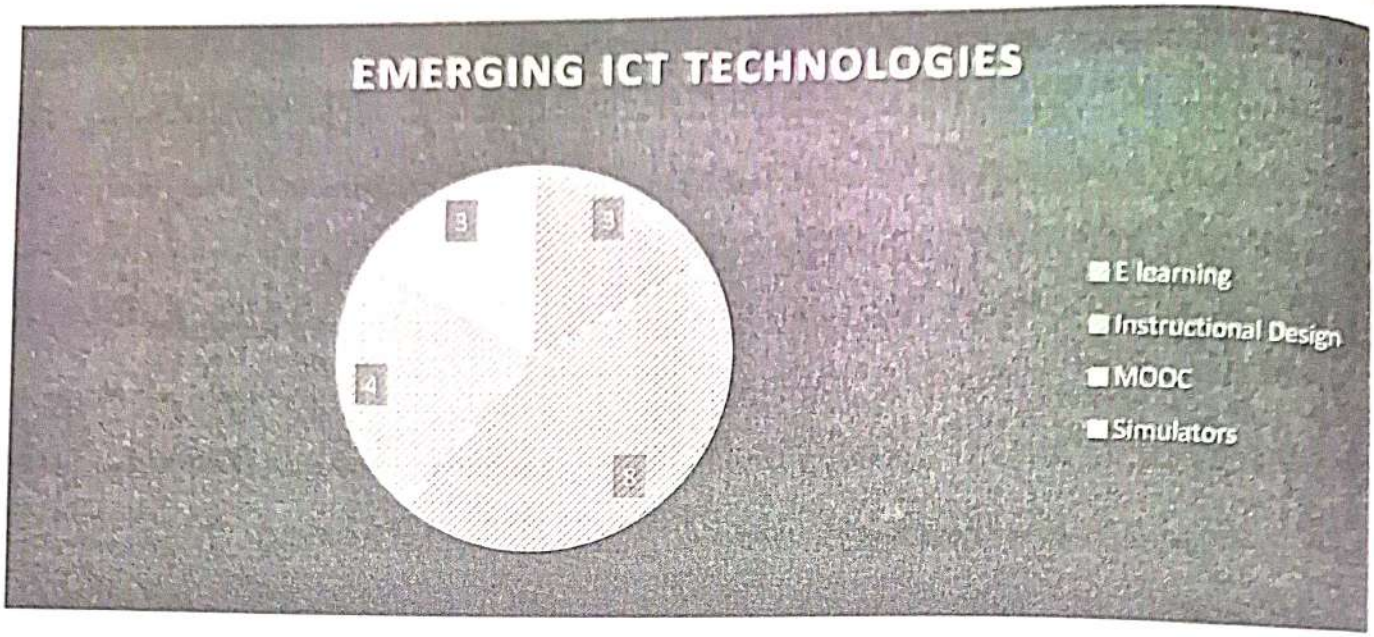

Analysis

The literature has moved from focusing on traditional means of entrepreneurship education towards more subtle and output-oriented factors of entrepreneurship education such as intentions, motivation, attitude, and behaviour. The most popular topic among researchers and with the greater number of published papers has analysed case study as a popular pedagogy used for entrepreneurship education (15) and it is closely related to practice, innovation, and entrepreneurial learning. But ICT learning (4) shows less usage in comparison.

5. Limitations

Although this review identifies some important trends and objectives of future research on ICT and entrepreneurship education, it also has some limitations. The first limitation is related to the technique used for the article search: our search was limited to the Scopus and Google scholar databases and to articles published between January 2014 and December 2023. Various other databases, including Web of Science, SCCI, SAGE, ProQuest, IEEE Explore and Springer, may be used in future investigations. In addition, this review was limited to research in the form of scientific articles. Future reviews may include a wider range of sources, such as conference papers, editorials, theses and dissertations, allowing researchers to explore the topic more deeply. In addition, several studies only scratch the surface of what is known about how ICT is integrated in entrepreneurship education without providing a comprehensive description. Therefore, the discussion and conclusions of this review are limited to the few studies that explicitly describe their findings.

6. Conclusion

Use of reliable, manageable and scalable technology in entrepreneurship education is yet to be adopted on a larger scale in India. In 2012, a new curriculum for higher education was

approved in India. This curriculum recommends a complete revision of the national entrepreneurship curriculum, which should conform to international standards but still considers local conditions (Venkataraman, 2018). In 2015, the government of India and Skill Development Corporation conducted an experimental study on vocational students to determine the effectiveness of technology in entrepreneurship teaching and found that the use of ICT is very low.

Not every student needs to become an entrepreneur, but all members of society need to be more entrepreneurial (Drucker,2011). We can presume that they would be more active, aware and responsible citizens, if entrepreneurial education and pedagogy were further promoted, especially during higher education and vocational education.
To achieve this, it is important to develop curriculum to integrate information and communication technology to increase the efficiency and motivation of learners. Trainers and faculty should act, not only as cultural, holistic and critical thinking promoters, but as facilitators, to develop a supportive environment to enhance the learning process.

There are many areas to be researched, as the impacts of ICT enabled entrepreneurship programs in alumni in long term, regarding professional activity. It would also be interesting to study the contribution of ICT and entrepreneurship education with respect to the perspective of teachers and the correlation or influence of social context in the impacts of entrepreneurial education and action. It also yields meaningful insights that can guide the successful adoption of the specific technology.

References

[1] Ajzen, I. (2005), Attitudes, Personality and Behavior I, Second Edition, Open University Press, ISBN 10: 0 335 21703 6 (pb) 0 335 2174 4 (hb) ISBN 13: 9780 335 217038 (pb) 9780 335 217045.

[2] Awwad, M.S., Al-Aseer, R.M.N. (2021), Big Five personality traits impact on entrepreneurial intention: the mediating role of entrepreneurial alertness, Asia Pacific Journal of Innovation and Entrepreneurship, 15(1), pp. 87-100. https://doi.org/10.1108/APJIE-09-2020-0136 Camera de Comerț și Industrie Cluj (2018)

[3] Manual Entrepreneurial Skills Nc Authorized Training Program, Sustainable Entrepreneurship in the NW Region, Human Capital Operational Programme 2014-2020 Priority axis 3- Jobs for all Specific objective 3.7- Increasing employment by supporting non-agricultural enterprises in the urban area Project title: Sustainable entrepreneurship in the North West Region.

[4] Entrepreneurs and their impact on jobs and economic growth, IZA World of Labor, 8. doi: 10.15185/izawol.8 Kuratko, D.F. (2013), Entrepreneurship: theory, process, and practice, Cengage Learning. Lițoiu, N. and Negreanu, M.C. (2011)

[5] Entrepreneurship - opportunity, skill, innovation, future - Study on the development of entrepreneurial opportunities with specific reference to the new areas of employment on the labour market (information society), POSDRU 92/3.1/S/62353. Bucharest (retrieved from www.icosecs7.upb.ro/resurse/Studiu%20rezumat.pdf). [5]López-

Núñez, M.I., Rubio-Valdehita, S., Díaz-Ramiro, E. and Martín-Seoane, G. (2021)Entrepreneurial profile of university students: a model, Journal of Education, 392, pp. 11-33.

[6] López-Núñez M.I., Rubio-Valdehita S. and Díaz-Ramiro E.M. (2022)

[7] The role of individual variables as antecedents of entrepreneurship processes: [7]Emotional intelligence and self-efficacy, Frontiers in Psychology, 13. doi: 10.3389/fpsyg.2022.978313 Martínez-Martínez, S.L. and Ventura, R. (2020), [8]Entrepreneurial Profiles at the University: A Competence Approach, Frontiers in Psychology, 11. doi:10.3389/fpsyg.2020.612796. Mushtaq, H. (2017)

[8] Entrepreneurial Profile & Trait Approach, Slideshare a Scribd Company (retrieved from https://www.slideshare.net/HusnainMushtaq2/entrepreneurial-profiletrait-approachenviron mental-socioculture-factors-affecting-entrepreneurship-supportsys-for-entrepreneur). Nicolau, C. and Foris, T. (2018)

[9] Human Resources Crisis: Identifying Future Entrepreneur's Profile in Romania, Procedia - Social and Behavioural Sciences, 238, pp. 572–581. doi:10.1016/j.sbspro.2018.04.0 Obschonka, M., Pavez, I., Kautonen, T., Kibler, E., Salmela-Aro, K. and Wincent, J. (2023)

[10] Job burnout and work engagement in entrepreneurs: How the psychological utility of entrepreneurship drives healthy engagement, Journal of Business Venturing, 38(2), 106272, ISSN 0883-9026. https://doi.org/10.1016/j.jbusvent.2022.106272 Pattinson, S. and Cunningham, J.A. (2022)

[11] Entrepreneurship in times of crisis. The International Journal of Entrepreneurship and Innovation, 23(2), pp. 71–74. https://doi.org/10.1177/14657503221097229

[12] Diener, E. and Lucas, R.E. (2019), Personality Traits, General Psychology: Required Reading. pp. 280-297. Drucker, P. (1993), Innovation and Entrepreneurship: Practice and Principles, Harper Collins Publishers, Inc., New York.

[13] Drucker, P. (1985), Innovation and Entrepreneurship: Practices and Principles, Harper & Row, New York. Fischer, B. (2021), How Do I Learn Entrepreneurship?, Elmhurst University (retrieved from https://www.elmhurst.edu/blog/learn-entrepreneurship/).

[14] Furdui, A., Lupu-Dima, L. and Edelhauser, E. (2021), Implications of Entrepreneurial Intentions of Romanian Secondary Education Students, over the Romanian Business Market Development, Process.

[15] Gimeno, J., Folta, T. B. and Cooper, A. C. (1997), Survival of the fittest? Entrepreneurial human capital and the persistence of underperforming firms, Administrative Science Quarterly, 42(4). GEM (2022),

[16] Global Entrepreneurship Monitor 2021/2022 Global Report: Opportunity Amid Disruption. London: GEM. (retrieved from https://gemconsortium.org/report/gem-20212022- global-report-opportunity-amid-disruption). Jimenez-Moreno, J. and Wach, K. (2014)

[17] The Entrepreneurial Profile of Students Participating in the Academic Entrepreneurship Course: Pilot Study Results, Horizons of Education, 13, pp. 121-143.

CEEOL copyright 2023 CEEOL copyright 2023 CES Working Papers | 2022 - volume

XIV(4) | wwww.ceswp.uaic.ro | ISSN: 2067 - 7693 | CC BY Technologies implemented in the business environment `367 Kautonen, T., Tornikoski, E. and Kibler, E. (2011)

[18] Entrepreneurial Intentions in the Third Age: The Impact of Perceived Age Norms, Small Business Economics, 37, pp. 219-234. doi: 10.1007/s11187- 009-9238-y.31 Kothari, D.H. (2013)

[19] Entrepreneurship Education And The Development Of Young People Life Competencies And Skills Laura Alvarez Marques, Cristina Albuquerque, ACRN Journal of Entrepreneurship Perspectives Vol. 1, Issue 2, p. 55-68, Nov. 2012 ISSN 2224-9729

[20] Socio-Psychological Factors of Entrepreneurship: A Survey, Research journal's Journal of Entrepreneurship, 1(1), pp. 1-11. Kritikos, A. (2014)

PROCEEDINGS OF THE NATIONAL CONFERENCE

COMPUTATIONAL SCIENCE AND ITS APPLICATIONS

Organized by

• Department of Computer Applications •

St. Anne's Degree College for Women

Halasuru, Bengaluru-560008

ISBN: 978-81-952814-6-6

13.12.2023

CONFERENCE PROCEEDINGS OF THE NATIONAL CONFERENCE ON COMPUTATIONAL SCIENCE AND ITS APPLICATIONS

Organized by

Department of Computer Applications

St. Anne's Degree College for Women

Permanently Affiliated to Bengaluru City University

Recognized by UGC under section 2(f), Accredited with 'A' Grade by NAAC,

An ISO 9001:2015 Certified Institution

 # 23, Cambridge Road, Halasuru, Bengaluru-560008

Editors:

Dr. Lily Regina Arthi Moses

Dr. K. Venkatalakshmi

Dr. Neha Mantri

Ms.Marina.B

Ms. Madhu T

ISBN: 978-81-952814-6-6

ISBN: 978-81-952814-6-6

Copyright@2024, St. Anne's Degree College for Women
No part of this publication may be reproduced or transmitted in any form by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or any information storage and retrieval system, without permission in writing from the copyright owners.

Disclaimer

The authors are solely responsible for the contents of the papers complied in this volume. The publishers or editors do not take any responsibility for the same in any manner.

Published By

St. Anne's Degree College for Women
Permanently Affiliated to Bengaluru City University
Recognized by UGC under section 2(f), Accredited with 'A' Grade by NAAC,
An ISO 9001:2015 Certified Institution
23, Cambridge Road, Halasuru, Bengaluru-560008

First Edition: 2024

© **St. Anne's Degree College for Women, Halasuru, Bengaluru**

Computational Science and Its Applications: National Conference Proceedings

December 13, 2023, St.Anne's Degree College for Women, Halasuru, Bengaluru -560008

Contents

Preface

Secretary's Message

Principal's Message

Expert Review

Sl No.	Title	Page No.
1.	**Palm Print Biometric Recognition and Deployment** ***Ms. S. Selvarani,*** *Assistant Professor, Department of Computer Applications, Fatima College (Autonomous), Madurai and Research Scholar (Ph.D – Part Time), Department of Computer Science & Applications, The Gandhigram Rural Institute, Gandhigram, Dindigul*	1
2.	**Digital Imaging and Communications in Medicine - DICOM Exploration using Image Steganography and Hashing** ***Ms. K. P. Maheshwari,*** *Research Scholar, Department of Computer Science & Applications, The Gandhigram Rural Institute (DTBU), Dindigul and Assistant Professor, Department of & Applications, Fatima College, Madurai.*	8
3.	**Systematic Literature Review of Entrepreneurship Education through use of ICT enabled experiential Learning** ***Ms. Nisha Joseph,*** *Research Scholar, Christ (Deemed to be) University, Bangalore-560029.* ***Dr Greta D'Souza,*** *Head of the Department, School of Education, Christ (Deemed to be) University, Bangalore*	20
4.	**Role Of ICT In Work-Life Balance of Teachers** (Higher Education Sector's Perspective) ***Sr. Kulandai Yesu C,*** *Research Scholar at Annamalai University and Assistant Professor, Dept. of Business Administration, St. Anne's Degree College for Women, Bengaluru* ***Dr. G. Latha****, Associate Professor, Dept. of Business Administration, Annamalai University*	31
5.	**A study on E-commerce start-ups and challenges in Bengaluru** ***R. Kavya,*** *Research Scholar, Department of Commerce and Management, Jain University, Bengaluru and Assistant Professor, Department of Business Administration, St. Anne's Degree College for Women, Halasuru*	38
6.	**Cryptography** ***Shaheda Baig,*** *II BCA, St. Anne's Degree College for Women, Halasuru*	45
7.	**Securing Land Records using Blockchain Technology** ***Ms. Afshan Rehman, Ms. Ambuja M, Mr. Vivek R Venkatesh,*** *Bengaluru City University, Bengaluru*	50

8.	**The Imperative for Government Support in Cold Chain Management Systems for Sustainable Development** ***Ms. A. Muthulakshmi,*** *Sacred Heart Degree College for Women, Bengaluru*	63
9.	**Computational Technologies: Internet of Things** **Ms. Tehrim Arfin Shamsi, Ms. Arisha Akhtar,** *II BCA, Department of Computer Application, St. Annes Degree College for Women, Halasuru*	71
10.	**Neural Networks** **Ms. Karuniya Sandra M,** *II BCA Students, Department of Computer Application, St. Annes Degree College for Women, Halasuru, Bangalore*	76
11.	**A study of cyber security challenges and its emerging trends on latest technologies** **Siddarama S,** *HoD, Department of Computer Science, Sri Bhagawan Mahaveer Jain First Grade College, K.G.F*	82
12.	**Chat Generative Pre-Trained Transformer (GPT)** ***Ms.Tanzia Khan, Ms. Joshna .L,*** *III BCA, Bachelors of Computer Applications, St. Anne's Degree College For Women, Halasuru, Bangalore*	88
13.	**Chat GPT: A Comprehensive Study on Conversational AI using Generative Pre-trained Transformers** ***Archana K, Kamakshi Katti,*** *Dept. of Data Science and Artificial Intelligence, MCU, Bengaluru, Assistant Professor, Department of Computer Science, BCU, Bengaluru.*	90
14.	**Leveraging Deep Learning for Diagnosis of COVID-19, Pneumonia, and Pleurisy: A Combined Approach of GoogleNet and ZFNet** ***Ms. Kavitha Rajalakshmi D, Ms. Janani B,*** *Research Scholar, Vellalar College for Women, Erode, Tamilnadu and Lecturer, Goodwill Christian College for Women, Bangalore*	107
15.	**A Review Paper on Cyber Security In Business** **Ms. Mitali Raj, Ms.Tanishaa S,** *III BBA, Department of Business Administration, St. Anne's Degree College For Women, Halasuru, Bangalore*	113
16.	**Investigation On the Prospects of Forthcoming Multi-Modal Biometrics Fusion** **Ms. B. Amala Renitha, Ms. P. Nagameenalokchini,** *III year UG, Department of Computer Applications, Fatima College, Madurai and* **S. Selvarani,** *Assistant Professor, Department of Computer Applications, Fatima College (Autonomous), Madurai*	121
17.	**A Study on Awareness Level on Use of ChatGPT Among the College Students** ***Shivani. E, Vijayalakshmi. S,*** *II M.Com, PG Department of Commerce, St. Anne's Degree College For Women, Halasuru, Bangalore* *Bangalore*	131

Role Of ICT In Work-Life Balance of Teachers (Higher Education Sector's Perspective)

*** Kulandai Yesu. C**

Research Scholar, Annamalai University and Assistant Professor, Dept. of Business Administration, St.Anne's Degree College for Women, Bengaluru

****Dr. G Latha**

Associate Professor, Dept. of Business Administration, Annamalai University

Abstract

India has made great strides in the development of ICT infrastructure, the use of digital resources, innovative teaching methods, and the building of talent teams. The country has an abundance of mobile phones and robust internet connectivity, with every classroom linked. With a learning environment this adaptable and a greater practical reliance on ICT, students are depending more on technology to enhance learning outcomes and closely connected competencies. Teaching-learning resources have greatly benefited from such electronic learning resources and e-learning systems.

Numerous facets of education have improved because of the well-equipped ICT infrastructure, including research, work efficiency, classroom administration, communication quality, and information management. In the upcoming years, there will be an increase in the use of ICT in education, particularly higher education, with the goal of further modernizing education. For example, there are varieties of software programs available for use in maintaining the Daily Class Record (DCR), which allow users to enter student information and do calculations using the program's built-in features.

This has substantially decreased the difficulties of professors and faculty members of the higher education sector to waste their time in record-keeping rather maintained them free for other work of unstructured or unplanned type.

Numerous studies are examining the relationship between teachers' jobs and ICT. Currently, ICT makes all facets of human life possible. ICT is viewed in higher education as a valuable instrument that helps with the gathering, utilizing, and organizing of data that is essential for making decisions. This paper aims to investigate the role of ICT in work-life balance of teachers in Higher Education sector.

Objectives

i) To understand the effects of ICT on HRM practices in the higher education sector.
ii) To identify the impact of ICT on work-life balance.

Keywords: ICT, Work-Life Balance, Human Resource Management Practices, Higher Education

1. Introduction

The overall effectiveness of organizations, including educational institutions, has been greatly enhanced by information and communication technology. Valuable insights like enhanced research, improved communication, higher-quality instruction, and resource accessibility have demonstrated that radical reforms arise when more people use technology in higher education. Human resources remain the ultimate power, even though technology has the upper hand.

Over the past ten years, some people have been given more freedom to choose how to draw boundaries between their work and personal lives thanks to the ease with which they can now access remote resources using everyday technology like laptops, cell phones, and the Internet. Before, the amount of work that workers could bring home with them depended on how much room their briefcases could hold or how much landline phone service they had. (Hamer, Brian, 2008) Recently, some knowledge workers have taken their use of laptops and cell phones beyond simple adoption, actively appropriating them so they can work whenever and wherever they choose. The traditional lines separating work and personal life have disappeared for this kind of worker.

2. Technology and Human Resource

It is not as easy as it may seem to manage human resources in the workplace. One of the best, finest, and least expensive ways to get to know someone is to observe what they do and what they want to do, according to Fredrick Taylor, who has written extensively on management. The core of any successful organization is its human resources, which are mainly focused on selecting, developing, rewarding, and evaluating the right individuals at the right time, location, and of course at the right cost. Being a part of the digital age means that HRM practices are bound to be impacted by its use. Hiring managers, who were previously primarily recognized for their paper-based processes, are now utilizing technology to expedite the process of shortlisting resumes, reviewing thousands of applications, conducting candidate interviews, and other tasks. This helps them and applicants save a great deal of time.

How much have ICT-enabled higher education institutions integrated into their marketing and HR departments? Human resource planning, development, training, recruitment, selection, appraisal, and compensation are all impacted by ICT use. According to Piabou, there is no denying that an organization's ability to succeed or fail is largely dependent on its workforce's knowledge, aptitude, conduct, and attitude. Humans contribute to development and growth.

The quality of operation of organizations in general, including educational organizations, has greatly improved thanks to information and communication technology. Important realizations like better research, increased communication, higher-quality instruction, and resource accessibility in higher education institutions have demonstrated that drastic changes arise as more people use technology. Although technology is on the rise, the ultimate power still belongs to human resources.

3. ICT's Application in India's Higher Education Sector

The education sector of India provides a great opportunity for about 29 percent of India's population among the age group of 0-14 years. India's higher education segment is projected to grow to Rs 2,44,824 crore (the US $ 35.03 billion) by 2025. The education sector in India is expected to reach the US $ 101.1 billion in FY19 and increased access to the Internet is expected to help in education delivery.

India has more than 250 million school going students, more than in any other country. It has one of the largest networks of higher education institutions in the world with 37.4 million students enrolled in higher education in India in 2018-19. The number of colleges and universities reached 39,931 and 993 respectively in 2018-19. Internet Users in India are likely to surge above 600 million by the end of the year 2019 including the internet growth in rural areas.

4. Recent HRM Trends with ICT

4.1 Recruitment with ICT

Human resource managers have evolved from the old mindset of an excessive amount of paperwork and drawn-out administrative processes. This results in a decrease in an organization's capacity to complete tasks more quickly while also cutting costs. They can more effectively manage their human resources thanks to ICT practices, which also free up HR professionals' time for other value-adding tasks and the pursuit of strategic goals.
One aspect further state that information and communication technology (ICT) has made things easier and better to manage, especially for large organizations with higher human capital and an abundance of data and information.

4.2 Enterprise Resource Planning

Technology can be used to manage administrative tasks like scheduling, calendars, meetings, incidents, and vacations. It can also be used to unify tasks and significantly reduce execution time. ICT architecture is required to create an organization's strategic line, which technology streamlines.

4.3 Technology, E-Learning, and Training

Training is crucial because it offers excellent solutions with several benefits. In addition to improving communication, intranets enable live classrooms, interactive sessions, and increased flexibility in how work is completed. Corporate e-learning facilitates the adoption of a variety of technologies that can revolutionize the workplace. One e-learning platform that allows for remote learning via HR departments is Moodle. Professionals can further enhance their knowledge by enrolling in NPTEL courses.

4.4 Legal compliances of registration, validation, and compliance

It's crucial to follow regulations and commitments in order to comply with changes and legal requirements, but doing so requires a lot of resources. ICT tools have been carefully designed to offer straightforward answers to these kinds of rules and legal obligations.
These servers enable efficient and secure management of document signatures, employee work schedule validation, and real-time management of all company-generated data by designated personnel. Furthermore, these servers support HR functions by enabling personnel to access information from any device.

4.5 Artificial Intelligence Assistance

First, AI can be used to automate communication, engage potential candidates, and facilitate quicker and simpler applicant coordination. Additionally, it can be used to streamline procedures like staff training, time sheet completion, and scheduling, freeing up the HR team's time for other crucial duties. Lastly, it can be used to log in and create a network of independent contractors and other project laborers, who by 2020 are predicted to account for over half of the workforce. In light of the fact that machine learning and analytics will only become more popular in the years to come, HR departments would be wise to invest in AI-related systems and training.

4.6 Application Tracking System

HR teams have also been utilizing application tracking systems (ATS) for many years. It is employed to handle and expedite the hiring process in addition to processing job applications. Employers save time and money by using applicant tracking systems (ATS), which also facilitate easy searching and retrieval of applicant data. Any hiring manager in the modern era must understand how to take full advantage of master and ATS. But since the applicant tracking system (ATS) has its own emotions, HR professionals should use it as an additional tool in their toolbox rather than as a replacement for the hiring manager. Good candidates who are changing careers or moving from another area might need to be screened again because automated screening under ATS uses particular keywords.

4.7 Evaluation process through ICT

Innovative databases can be used to create, store, and manage employee data and information. It is possible to preserve information about them, including their name, contact information, employment status, performance, benefits, and pay. This will make it easier to locate the necessary data when needed, and it can be linked to the evaluation process. Designing a more effective employee compensation structure will be aided by data that is clear, concise, accurate, and easy to access.

4.7 Technology and Work-Life Balance

Recognizing that the lines between personal and professional life have become increasingly hazy due to technology. Work and personal life cannot be separated for any length of time. Increased use of mobile phones has eliminated the concept of work-life balance.

Finding the ideal job is never the only factor in work-life balance; it's also important to manage the space between the two, setting boundaries along the way, and incorporating wellness into a calm, everyday routine. The problem is exacerbated when it comes to working women; married women and single mothers are the most prone to juggling the two. Tennakoon (2018) If not handled properly, a fantastic job could be in danger of failing, and vice versa.

Technology has made many claims to help with job-related issues, facilitate better communication, and increase worker productivity at work; however, a recent survey indicates that 70% of workers believe that technology has interfered with their personal lives and made it harder to maintain a healthy balance.

Technology should not be viewed as a magic fix or a cure-all until it is integrated with a strategy to prevent employee burnout. The important overview of technology and how work-life balance was destroyed can be found here.

i) According to a report of GFI, 81% of workers check their work email addresses outside their work hours. As encouraging this finding maybe for the organisations, equally terrible and shocking it is for their families
ii) Unquestionably, both physical and mental exhaustion occurs, so workers require well-rested schedules that involve no thought of their jobs at all. They need to do this in order to be productive the following day.
iii) The boss, supervisors, or employers should respect the hours worked after work. They should not send emails at midnight and expect a quick response.
iv) The number of people working from home, part-time, remotely, and as freelancers is rising.

5. Suggestions

5.1 Suggestion for The Management For Work-Life Balance

i) Hold seminars on time management, stress management, work-life balance, and personal energy management to assist staff in setting goals and making better decisions in order to attain the ideal degree of work-life balance.
ii) Stress reduction and the development of a thorough understanding of life are two benefits that employees will receive from practices like yoga, meditation, human values, life seminars, etc.
iii) Whenever necessary, consulting services may be provided so that teaching staff members can maintain their composure and body rhythm through consultants or affiliated bodies.
iv) Mental health and physical health sessions can be beneficial.
v) Good practices to adhere to include team-building activities, staff get-togethers such as festival celebrations, camping, and tours. Other significant influencing elements that can be utilized as an effective retention strategy for training staff members include free health examinations, health insurance, and fitness centers.

vi) The management should set up stress-relieving activities and get more acquainted with the teaching staff. Continue to gather for cultural or recreational events, as needed.

vii) It can be very beneficial to offer on-site amenities like lodging, prepared meals, a cafeteria, a medical room, crutch services, taxi services, health insurance, physicals, and an on-site sports room.

5.2 Suggestions for teaching staff of higher education institutions-

i) Time management, planning, and prioritization are essential. Teaching staff members need to plan their time better in order to balance their obligations in work and life.

ii) To determine what they want from their personal and professional lives, a life analysis must be conducted.

iii) They will comprehend, concur upon, and put work delegation into practice.

iv) They can ensure that they follow the plan and plan for their ongoing professional development (CPD).

v) Engaging in physical activity, sports, walks in the evening, and concerts will help them decompress from the stress of their job.

vi) They have access to the NHS management website, www.nhsmanagement.org, which offers a variety of helpful advice, links to other websites, and a section specifically for managing stress at work.

vii) The best way to get support and learn about what people are doing and why is to have a conversation with family, friends, and coworkers.

6. Conclusion

The relevance of being increased by the growing diversity of family structures represented in the workforce, such as dual-earner couples, single parents, mixed families, teaching staff members with eldercare responsibilities, and an increasing number of people choosing to live alone and balance work and life. Roles for the majority of men and women in the workforce. The interface between work and life roles has become much more complex as a result of these social developments, particularly when it comes to educational institutions.

Institutions ought to think about regulating child watch more strictly than they do staff education. However, there are also high expectations for teaching staff members in this area. It should be mentioned that management has the ability to focus more on this area. Also, management needs to give flexible work schedules extra consideration. It is true that work-life balance strategies can improve employee wellbeing when they are incorporated into educational institutions' annual planning. As a result, it is equally crucial to train employees to communicate their needs and expectations, since they cannot rely on institutions or management to resolve conflicts for them.

References

[1] Muthulakshmi, C. (2018). A Study on Work-Life Balance Among The Teaching Professionals. Ictact Journal on Management Studies, 657-662.

[2] Brian Harmer, D. J. (2008). Cause Or Cure: Technologies And Work-Life Balance. International Conference on Information Systems (ICIS)ICIS 2008 Proceedings (p. 163). Paris: AIS Electronic Library.

[3] Daniel Karanja, Anthony Kiplang'at Sang, Mwangi Ndirangu. Influence of Integration of ICT on Human Resource Management in Kenyan Public Universities. International Journal of Sustainability Management and Information Technologies. Vol. 3, No. 6, 2017, pp. 73-78. doi: 10.11648/j.ijsmit.20170306.13

Web Sources

- http://ictactjournals.in/paper/IJMS_Vol_4_Iss_1_Paper_1_657_662.pdf
- https://gethppy.com/hrtrends/hr-trends-in-the-digital-age
- https://hr-technology.cioreviewindia.com/cioviewpoint/role-of-information-technology-in-hrm-opportunities-and-challenges-nid-2841-cid-32.html
- https://bluivygroup.com/why-marketing-and-hr-need-to-work-together-on-the-employer-branding-strategy/
- https://www.business2community.com/human-resources/hr-marketing-bringing-together-better-business-01845846
- https://www.forbes.com/sites/theyec/2019/03/26/three-ways-technology-can-help-with-work-life-balance/#bf986593b15f

ISBN : 978-93-92993-43-5

GLOBAL ACADEMY OF TECHNOLOGY
Department of Management Studies
Bengaluru, Karnataka, India

ECONOMIC PROSPERITY & SUSTAINABLE DEVELOPMENT GOALS

Editors :
Dr. N. Rana Pratap Reddy
Dr. N. Venkatesh Kumar

PRIMAX PUBLICATIONS
Bengaluru, Karnataka, India

Book Title : **Economic Prosperity & Sustainable Development Goals**

Copy Right : Primax Publications, Bengaluru, Karnataka, India.

Editors : **Dr. N. Rana Pratap Reddy**
Dr. N. Venkatesh Kumar

First Edition : 2024

Book Size : B5 Size

ISBN : **978-93-92993-43-5**

Date of Publication : 31-01-2024

Copy Right © Primax Publications, Bengaluru, Karnataka, India.

All rights reserved. No part of this publication may be reproduced, or transmitted in any form or by any means, without permission. Any person who does any unauthorised act in relation to the publication may be liable to criminal prosecution and civil claims for damages.

Disclaimer: The views expressed in the articles are those of the Authors/Contributors and not necessarily of the editors and publisher. Author/Contributors are themselves responsible for any kind of plagiarism found in their articles and any related issues.

Published and Printed by:

PRIMAX PUBLICATIONS

No 184/163, Jagajyothi Layout
Kenchanapura Cross, Nagadevanahalli
Bengaluru - 560056, Karnataka, India

E-Mail : primaxpublication@gmail.com

Web : www.primaxijcmr.com

Sl.No.	Title of the Articles	Name of the Authors	Page No.
52	**A Study on Content Marketing Strategies on Brand Equity with Reference to FMCG Sector**	**Dhanush M.K** PG Research scholar Department of Management Studies Global Academy of Technology Bengaluru **Dr Anitha G.H** Professor Department of Management Studies Global Academy of Technology Bengaluru	53
53	**The Role of Entrepreneurship Education Programme on Intention and Self-Efficacy of Community College Students**	**Nisha Joseph** Principal St Anne's Degree College for Women Bengaluru, Karnataka **Dr Greta D'Souza** Head of the Department School of Education Christ (Deemed to be) University Bengaluru, Karnataka	54
54	**Exploring the Impact of Leadership Styles on Organizational Performance: A Comprehensive Analysis**	**Nikhil Gowda N** Assistant Professor Dept. of Commerce Adichunchanagiri University B G Nagara, Nagamangala **Vanishree K** Assistant Professor Dept. of Commerce Adichunchanagiri University B G Nagara, Nagamangala **Chaithanya M H** Assistant Professor Dept. of Commerce Adichunchanagiri University B G Nagara, Nagamangala	55

ISBN : 978-93-92993-43-5

THE ROLE OF ENTREPRENEURSHIP EDUCATION PROGRAMME ON INTENTION AND SELF-EFFICACY OF COMMUNITY COLLEGE STUDENTS

Nisha Joseph
Principal
St. Anne's Degree College for Women
Bengaluru, Karnataka

Dr. Greta D'Souza
Head of the Department, School of Education
Christ (Deemed to be) University
Bengaluru, Karnataka

ABSTRACT

The evolving contours of higher education curricula calls for intellectual exploration and reformative potential in the realm of components of learning and learning outcomes. Education, especially skills development for economic vitality needs to reorienting and reviewing the curricula to include entrepreneurship and small business management for those who will start their own enterprise. It highlights the need for innovation and skill-based education especially focusing on developing entrepreneurship competencies and adopting an intensive approach combining active learning methods. The study aims to understand the impact of entrepreneurship education module based on experiential learning on the intention and self-efficacy of vocational education students. The study uses a one group pretest post-test design. It is based on the theoretical framework of the Theory of Planned behaviour, a cognitive theory, proposed by Icek Ajzen according to which, an individual's decision to engage in a specific behaviour is influenced by their intention to perform that behaviour. It reflects the motivational factors that drive human behaviour. The study aims to provide valuable insight for curriculum planners, instructors about how best they can enhance the overall teaching and learning process in entrepreneurship education and how student's ability to grasp the subject can be improved by adopting certain strategies.

Keywords : entrepreneurship Intention, Self-Efficacy, Experiential Learning, vocational Education

ಕನ್ನಡ ಸಾಹಿತ್ಯ : ಮಹಿಳಾ ಚಿಂತನೆಗಳು

ಸಂಪುಟ-೨

ಗೌರವ ಸಂಪಾದಕರು
ಡಾ. ರವೀಶ ಹೆಚ್. ವಿ.

ಸಂಪಾದಕರು
ಅನಿತ ಕೆ. ವಿ.
ಡಾ. ಚೇತನಾ ಹೆಗಡೆ

ಮೌಂಟ್ ಕಾರ್ಮೆಲ್ ಕಾಲೇಜು, ಸ್ವಾಯತ್ತ, ಬೆಂಗಳೂರು
ಕನ್ನಡ ವಿಭಾಗವು ಆಯೋಜಿಸಿದ ಅಂತಾರಾಷ್ಟ್ರೀಯ ವಿಚಾರ ಸಂಕಿರಣದ
ಸಂಶೋಧನ ಲೇಖನಗಳು

ಕನ್ನಡ ಸಾಹಿತ್ಯ : ಮಹಿಳಾ ಚಿಂತನೆಗಳು

ಸಂಪುಟ – ೨

ಮೌಂಟ್ ಕಾರ್ಮೆಲ್ ಕಾಲೇಜು, ಸ್ವಾಯತ್ತ, ಬೆಂಗಳೂರು,
ಕನ್ನಡ ವಿಭಾಗ ಆಯೋಜಿಸಿದ ಅಂತರಾಷ್ಟ್ರೀಯ ವಿಚಾರ ಸಂಕಿರಣದ
ಸಂಶೋಧನ ಲೇಖನಗಳು

ಗೌರವ ಸಂಪಾದಕರು

ಡಾ. ರವೀಶ ಹೆಚ್.ವಿ.

ಸಂಪಾದಕರು

ಅನಿತ ಕೆ.ವಿ.

ಡಾ. ಚೇತನಾ ಹೆಗಡೆ

ಅವ್ಯಕ್ತ ಪ್ರಕಾಶನ

ಬೆಂಗಳೂರು – 560068

ಮೊ. : 9900229868

Kannada Sahitya : Mahila chinthanegalu, Vol - 2
(collection of Research Articles)

Edited by : Dr. Raveesh H.V.
Anitha K.V., Dr. Chetana Hegde

Published by : Avyaktha Prakashana
102 SLV Shruthi, 7th Cross
Vyasaraja Road, Bengaluru - 560068
: Mob : 8792693438

ISBN No : 978-81-969935-5-9

(C) : ಲೇಖಕರವು

ಕನ್ನಡ ಸಾಹಿತ್ಯ : ಮಹಿಳಾ ಚಿಂತನೆಗಳು ಸಂಪುಟ – ೨
(ಸಂಶೋಧನ ಲೇಖನಗಳು)

ಸಂಪಾದಕರು : ಡಾ. ರವೀಶ ಹೆಚ್.ವಿ.
ಅನಿತ ಕೆ.ವಿ., ಡಾ. ಚೇತನಾ ಹೆಗಡೆ

ಪ್ರಕಾಶಕರು : ಅವ್ಯಕ್ತ ಪ್ರಕಾಶನ
102, ಎಸ್ಎಲ್ವಿ ಶ್ರುತಿ,
7ನೇ ಕ್ರಾಸ್, ವ್ಯಾಸರಾಜ ರಸ್ತೆ, ಬೆಂಗಳೂರು – 560068
ಮೊ. : 8792693438

ಮುದ್ರಣ : 2024
ಬಳಸಿದ ಕಾಗದ : 1/18 ಡೆಮಿ 80 ಜಿ.ಎಸ್.ಎಂ., ಎನ್.ಎಸ್. ಮ್ಯಾಪ್ಲಿಥೋ
ಪುಟಗಳು : xiv + 378 = 392 + 2
ಬೆಲೆ : ರೂ. 485/–
ಮುಖಪುಟ ಚಿತ್ರ : ಶ್ರೀ ಶಂಕರ ಬೆನ್ನೂರ
ಅಕ್ಷರ ಜೋಡಣೆ : ಶ್ರೀಮತಿ ಜ್ಯೋತಿ ಮತ್ತು ಶ್ರೀಮತಿ ಕಾವ್ಯ ಕೆ.
ಮುದ್ರಕರು : ಯಂತ್ರೋದ್ಧಾರಕ ಪ್ರಿಂಟರ್ಸ್ ಬೆಂಗಳೂರು

ವಿ.ಸೂ : ಈ ಸಂಪಾದಿತ ಪುಸ್ತಕದಲ್ಲಿ ಪ್ರಕಟವಾಗಿರುವ ಸಂಶೋಧನ ಲೇಖನಗಳ ವಿಷಯ ಹಾಗೂ ಅಭಿಪ್ರಾಯಗಳಿಗೆ ಆಯಾ ಲೇಖಕರೇ ಜವಾಬ್ದಾರರು.

14. ಬೆಸಗರಹಳ್ಳಿ ರಾಮಣ್ಣನವರ ಕಥೆಗಳಲ್ಲಿ ಸ್ತ್ರೀ ಪ್ರತಿನಿಧೀಕರಣ
– ಮಮತ ಎ. 131

15. ತ್ರಿವೇಣಿ ಕಥಾಸಾಹಿತ್ಯದಲ್ಲಿ : ಮಹಿಳೆ ಮತ್ತು ಕುಟುಂಬ ಸ್ವರೂಪ
– ಡಾ. ಶಕೀಲಾ ಕೆ. 137

16. ತ್ರಿವೇಣಿ ಕಾದಂಬರಿಗಳಲ್ಲಿ ಮಹಿಳಾ ಅಸ್ಮಿತೆ
– ಡಾ. ಪುಷ್ಪಲತಾ ಎಂ. ಎಸ್. 150

17. ಅನ್ವೇಷಣೆಯಲ್ಲಿ ಅಹಲ್ಯೆ
– ಡಾ. ರವೀಶ್ ಹೆಚ್. ವಿ. 160

18. ಪ್ರೇಮಾ ಭಟ್ ಅವರ ಕಥೆಗಳಲ್ಲಿ ಮಹಿಳಾ ಸಂವೇದನೆಗಳು
– ಡಾ. ಆನಂದಕುಮಾರ ಎಂ ಜಕ್ಕಣ್ಣವರ 166

19. ಗೀತಾ ನಾಗಭೂಷಣರವರ ಕಥಾ ಸಾಹಿತ್ಯದಲ್ಲಿನ ಸಾಮಾಜಿಕತೆ
– ಡಾ. ಪ್ರಮೀಳ 179

20. ವೈದೇಹಿಯವರ ಕಥೆಗಳಲ್ಲಿ ಸ್ತ್ರೀ ಲೋಕದ ಸೂಕ್ಷ್ಮ ಅನಾವರಣ
– ಕಲ್ಪನಾ 193

21. ಬಿ.ಟಿ ಲಲಿತಾ ನಾಯಕ ಅವರ ಕಥೆಗಳಲ್ಲಿ ಸ್ತ್ರೀವಾದಿ ನೆಲೆಗಳು
– ಗಾಯತ್ರಿ ಆರ್. ಅಂಟೀನ 204

22. ಪದರಗಳು ಒಂದು ಅವಲೋಕನ
– ಡಾ. ಪ್ರಮೀಳಾ ಮಾಧವ್ 218

23. ಡಾ. ಸುಧಾ ಮೂರ್ತಿ ಅವರ ಸಾಹಿತ್ಯದಲ್ಲಿ ಮಹಿಳೆ ಮತ್ತು ಶಿಕ್ಷಣ
– ಪ್ರಣೀತಾ ಟಿ. 236

24. ಎಂದೂ ಬಾಡದ ರಂಗ ಪುಷ್ಪ – ಮರಿಯಮ್ಮನಹಳ್ಳಿ ಕೆ. ನಾಗರತ್ನಮ್ಮ
– ಆರ್. ಪಿ. ಮಂಜುನಾಥ್ ಬಿ.ಜಿ. ದಿನ್ನೆರಂಗ 243

25. ಟಿ. ಎಸ್. ನಾಗಾಭರಣ ಅವರ ಸಾಹಿತ್ಯ ಕೃತಿಯಾಧಾರಿತ
ಸಿನಿಮಾಗಳಲ್ಲಿ ಸ್ತ್ರೀ ಸಂವೇದನೆ
– ಸಂಪತ್ ಕುಮಾರ್ ಎಂ. 250

26. ಅರಬ್ ಮಹಿಳಾ ಕಾವ್ಯ ಮತ್ತು ಸಮಕಾಲೀನ ಬಿಕ್ಕಟ್ಟು
– ಡಾ. ಮದಗೊಂಡ ಬಿರಾದಾರ 262

27. ಜೋಗಿಯವರ ಸಾಹಿತ್ಯದಲ್ಲಿ ಮಹಿಳೆ
– ಗೀತಾ ಎಸ್. 274

ಗೀತಾ ನಾಗಭೂಷಣರವರ ಕಥಾ ಸಾಹಿತ್ಯದಲ್ಲಿನ ಸಾಮಾಜಿಕತೆ

– ಡಾ. ಪ್ರಮೀಳ

ಗೀತಾ ನಾಗಭೂಷಣರವರ ಕಥಾ ಸಾಹಿತ್ಯದಲ್ಲಿ ಸಾಮಾಜಿಕ ಸಂಬಂಧದ ಬಗ್ಗೆ ಒಂದು ಭಿನ್ನವಾದ ಚಿಂತನೆ ಇದೆ. ಅದು ಹೇಗೆ? ಯಾವ ಸ್ವರೂಪದ್ದು ಎಂದು ತಿಳಿಯಬೇಕಾದದ್ದು ಮಹತ್ವದ ವಿಚಾರ, ನಮ್ಮ ಪುರುಷಪ್ರಧಾನ ಸಮಾಜದ ಚಿಂತನೆಗಳು ಹೆಣ್ಣಿನ ಅಸ್ಮಿತೆಯನ್ನು ದಾಖಲಿಸದೆ ಹೋಗಿವೆ. ಸಂಸ್ಕೃತಿಯ ಇತಿಹಾಸದಲ್ಲಿ ಹೆಣ್ಣಿನ ಈ ಗೈರುಹಾಜರಿ ಅತ್ಯಂತ ಮುಖ್ಯವಾದ ಪ್ರಶ್ನೆಗಳನ್ನು ಎತ್ತುತ್ತದೆ. ಸಮಾಜದಲ್ಲಿ ಆಕೆಯ ಸಂಬಂಧದ ಕುರಿತು ನೋಡಬೇಕಾಗಿದೆ. ಈ ಬದುಕಿನ ಕೌರ್ಯದ ಬಗ್ಗೆ, ಹಿಂಸೆಯ ಬಗ್ಗೆ, ಪುರುಷ ಪ್ರಧಾನ ವ್ಯವಸ್ಥೆ ಹುಟ್ಟು ಹಾಕಿರುವ ಹೆಂಗಸರ ಶೋಷಣೆಯ ಬಗ್ಗೆ, ರೀತಿ ರಿವಾಜುಗಳ ಬಗ್ಗೆ, ಪುರುಷ ಸಮುದಾಯದ ಹುನ್ನಾರಗಳ ಬಗ್ಗೆ ತಮ್ಮ ಕಥೆಗಳಲ್ಲಿ ವಿವರಿಸುತ್ತಾರೆ. 80ರ ದಶಕಗಳ ನಂತರದಿಂದ ಹೆಣ್ಣು ಮಕ್ಕಳು ಎದುರಿಸುತ್ತಿರುವ ಸಮಸ್ಯೆ ಮತ್ತು ಸವಾಲುಗಳನ್ನು ವಿವರಿಸುತ್ತಾ, ಹೆಣ್ಣುಮಕ್ಕಳ ನೋವಿಗೆ ಧ್ವನಿಯಾಗುತ್ತಾ ಸಮಾಜದ ವ್ಯವಸ್ಥೆಗೆ, ಸನಾತನವಾದಿಗಳಿಗೆ ಸವಾಲನ್ನು ಹಾಕುತ್ತಾ ಗೀತಾ ನಾಗಭೂಷಣರವರು ಬರೆಯತೊಡಗಿದರು.

ಹೀಗಾಗಿ ಗೀತಾ ನಾಗಭೂಷಣರವರ ಕಥಾ ಸಾಹಿತ್ಯದಲ್ಲಿನ ಸಾಮಾಜಿಕ ಸಂಬಂಧದ ಸ್ವರೂಪದ ಅಧ್ಯಯನವನ್ನು ಮಾಡಬೇಕಾದ ಅವಶ್ಯಕತೆ ಇರುವುದರಿಂದ ಅವರ ಕೆಲವು ಕಥೆಗಳನ್ನು ಗಮನಿಸಿ, ಅವುಗಳನ್ನು ವಿಶ್ಲೇಷಣಾತ್ಮಕ ವಿಧಾನದಿಂದ ನೋಡುವುದೇ ಈ ಪ್ರಬಂಧದ ಮುಖ್ಯ ಗುರಿ ಹಾಗೂ ಉದ್ದೇಶವಾಗಿದೆ.

ಆಧುನಿಕ ಕಾಲಘಟ್ಟದಲ್ಲಿ ಕೋಟ್ಯಾಂತರ ಸಣ್ಣಕಥೆಗಳು ಬಂದಿವೆ. ಅವುಗಳ ತಂತ್ರ ವಿನ್ಯಾಸವನ್ನು ಗಮನಿಸಿದರೆ ದಲಿತ ಕಥಾಸಾಹಿತ್ಯ ಭಿನ್ನವಾಗಿದೆ. ಅಲ್ಲದೆ ಕನ್ನಡದ ಸಾಂಸ್ಕೃತಿಕ ಪರಿಸರಕ್ಕೆ ಒಂದು ಹೊಸ ಸಂವೇದನೆ ಮತ್ತು ಹೊಸವಸ್ತು ಇವುಗಳನ್ನು ಕೊಟ್ಟ ಖ್ಯಾತಿ ಇದಕ್ಕಿರುತ್ತದೆ. ದಲಿತ ಸಾಹಿತ್ಯ ಪ್ರಕಾರದ ವಿಶಿಷ್ಟತೆಯನ್ನು ಗಮನಿಸಿದರೆ, ಈ ಪ್ರಕಾರ ಮುಖ್ಯ ವಾಹಿನಿಯಲ್ಲಿ ಇಲ್ಲದ ನಿರ್ಲಕ್ಷಿತ ಸಾಮುದಾಯಿಕ ಚಿತ್ರಣವನ್ನು ದಾಖಲಿಸುತ್ತದೆ. ದಲಿತ ಸಾಹಿತ್ಯವು ತನಗಿಂತ ಹಿಂದೆ ಬಂದ ನವೋದಯ, ನವ್ಯಸಾಹಿತ್ಯದ ಮಿತಿಗಳನ್ನು ಪ್ರಶ್ನಿಸಿ, ವಿಮರ್ಶಿಸುವ ಕೆಲಸವನ್ನು ದಲಿತ ಸಾಹಿತ್ಯ ಪ್ರಕಾರ ಮಾಡಿತು. ಎಡಪಂಥೀಯ ಒಲವು, ಶೋಷಿತರ ಪರವಾದ ಹೋರಾಟ, ಅಸ್ಪೃಶ್ಯತೆ, ಜಾತಿಪದ್ಧತಿ ಮತ್ತು ಲಿಂಗತಾರತಮ್ಯಗಳ ವಿರುದ್ಧ ಧ್ವನಿ ಎತ್ತುವ ಕೆಲಸವನ್ನು ದಲಿತ ಸಾಹಿತ್ಯ ಮಾಡಿತು. ಅಲ್ಲದೆ ಸಮಾನತೆಯ ಸಮಾಜವನ್ನು ಕಟ್ಟುವ ಕನಸನ್ನು ಕಾಣತೊಡಗಿತ್ತು. ಹೀಗೆ ತನ್ನದೇ ಆದ ತತ್ವ ಮತ್ತು ಮೌಲ್ಯಗಳನ್ನು ಮುಂದಿಡುವ ದಲಿತ ಕಥನಗಳು ಸಂಶೋಧನೆಗೆ ಆಹ್ವಾನವನ್ನು ನೀಡುತ್ತವೆ. ದಲಿತ ಕಥೆಗಳಲ್ಲಿ ನಾವು ಗೀತಾ ನಾಗಭೂಷಣರ ಸಣ್ಣಕಥೆಗಳು ಮುಖ್ಯವಾಗಿವೆ.

ಗೀತಾ ನಾಗಭೂಷಣರ ಸಣ್ಣಕಥೆಗಳು 'ಕ್ಯಾದಿಗಿ ಬನದಾಗ ಕತೆಯಾಗಿ ನಿಂತವರು' ಎಂಬ ಸಮಗ್ರ ಕಥಾಸಂಕಲನವಾಗಿ ಸಿವಿಜಿ ಪ್ರಕಾಶನದಿಂದ ಪ್ರಕಟವಾಗಿದೆ. ಅಲ್ಲಿ ಅರಳುವ ಕೇದಗೆಯ ಅಂಚಿನಲ್ಲೆಲ್ಲ ಚುಚ್ಚುವ ಮುಳ್ಳುಗಳು, ಸದಾ ಈ ಹಾವುಗಳು ಮುಳ್ಳುಗಳ ಭಯದ ನೆರಳಿನಲ್ಲೇ ಕೇದಗೆ ಅರಳಿ ನಳನಳಿಸುವಂತೆ ಅಸ್ಪೃಶ್ಯತೆ ಮತ್ತು ಶೋಷಣೆಯ ಕಲ್ಲುಮುಳ್ಳುಗಳಲ್ಲಿ ಜೀವಯಾಪನೆ ಮಾಡುವ ಅಮಾಯಕ, ದುರ್ಬಲ, ಜನವರ್ಗದ ಬದುಕಿನ ನೋವು, ಸಂಕಟ, ದುಃಖ ದುಮ್ಮಾನಗಳಿಗೆ ಕನ್ನಡಿ ಹಿಡಿದ ಗೀತಾರವರು. ಈ ಕೃತಿಯ ಬಗ್ಗೆ ಮಾತಾನಾಡುತ್ತ 'ಕೆಳವರ್ಗದ ಮತ್ತು ದಲಿತರನ್ನೊಳಗೊಂಡ ಇಡೀ ಶೂದ್ರ ಸಮುದಾಯಗಳ ಬದುಕಿನ ಅಸಲಿ ತುಣುಕುಗಳು ಇಲ್ಲಿ ಕತೆಯಾಗಿವೆ. ಇವುಗಳಲ್ಲಿ ನೋವಿದೆ,

ಸಂಘರ್ಷವಿದೆ. ಕೆಲವೆಡೆ ರಾಜಿಯೂ ಇದೆ. ಅಂತೆಯೇ ಶೋಷಣೆಯ ಹಲವಾರು ಮಗ್ಗಲುಗಳ ಬೆತ್ತಲೆಯೂ ಇದೆ. ಕಪ್ಪು ಮಂದಿಯ ಬದುಕಿನ ಕತ್ತಲೆಯೂ ಇದೆ. ಉಳಿವಿಕೆಗಾಗಿ ನಡೆಸುವ ಬಡಿದಾಟದ ವಿವಿಧ ಸ್ತರಗಳ ಸಾಚಾತನವೆಲ್ಲ ಇಲ್ಲಿ ಕತೆಯ ಅಚ್ಚಿನಲ್ಲಿ ಆಕಾರ ತಳೆದು ನಿಂತಿವೆ ಎನ್ನಬಹುದು.'

ತಮ್ಮ ಕೊಳಚೆಗೇರಿಯ ಸಾವಿರಾರು ಹೆಣ್ಣುಮಕ್ಕಳ ಪ್ರತಿನಿಧಿಯಾಗಿ, ಧ್ವನಿಯಿಲ್ಲದವರಿಗೆ ಧ್ವನಿಯಾಗುತ್ತಾ, ವಿಚಾರವಂತರಿಗೆ ಬೆಂಬಲನೀಡುತ್ತಾ ಲೇಖನಿ ಮುಂದುವರೆಸಿದರು. ದಲಿತಬಂಡಾಯ ಚಳವಳಿ, ಬಸವಣ್ಣ ಅಂಬೇಡ್ಕರ್ ವಿಚಾರಧಾರೆಗಳು ಸಾಣೆ ಹಿಡಿದ ಖಡ್ಗದಂತೆ ಅವರ ಲೇಖನಿಗೆ ಶಕ್ತಿ, ಸತ್ವವನ್ನು ನೀಡಿದವು. ಮನಸ್ಸಿನಾಳದ ನೋವು ದ್ವೇಷ, ಸಿಟ್ಟು, ರೋಷಗಳು ಬಿರಿದ ಅಣೆಕಟ್ಟಿನಿಂದ ಚಿಮ್ಮುವ ನೀರಧಾರೆಯಂತೆ 'ನೆಲದಿಂದಕ್ಕುವ ಲಾವಾರಸದಂತೆ' ಚಿಮ್ಮಿ ಹರಿಯತೊಡಗಿದವು. ವೈಯುಕ್ತಿಕ ನೋವುಗಳ ಜತೆಯಲ್ಲಿ ಕೊಳೆಗೇರಿಯ ಅನ್ಯಾಯ, ಶೋಷಣೆ, ಹಾದರ, ಕಳ್ಳತನ, ಜಗಳ, ಬಡಿದಾಟ, ಮುಗ್ಧತೆ, ಮೌಢ್ಯ, ಪುರುಷ ಪ್ರಧಾನ ಹುಳುಕು, ಹುನ್ನಾರ – ಹೀಗೆ ಹಲವು ಅಂಶಗಳನ್ನು ತಮ್ಮ ಬರವಣಿಗೆಯ ಮೂಲಕ ಹೊರತಂದರು.

ಬದುಕು ನುಂಗುವ ಮಂದಿ ಕಥೆಯಲ್ಲಿ ತಮ್ಮ ಸೀಮಿತ ಬಯಕೆಗಳನ್ನೂ ಪೂರೈಸಲಾಗದ ಕೆಳವರ್ಗದ ಜನರ ಬಡತನ, ಅಸಹಾಯಕತೆ, ಶ್ರೀಮಂತರ ದರ್ಪ, ದೌಲತ್ತುಗಳು, ಧರ್ಮರಕ್ಷಣೆಯ ಪರಿಧಿಯಲ್ಲೇ ಸೆರಗು ಹಾಸುವ ಅಧರ್ಮ, ಅತ್ಯಾಚಾರಗಳು – ಇತ್ಯಾದಿಗಳ ಮೂಲಕ ಕತೆಗಾರ್ತಿ ಸಮಾಜದ ಕ್ರೌರ್ಯ ಮತ್ತು ಸಾರ್ಥವನ್ನು ಬಯಲಿಗೆಳೆಯುತ್ತಾರೆ.

'ದಾಳ' ಕಥೆಯಲ್ಲಿ ನ್ಯಾಯದ ಹಾದಿಯಲ್ಲಿ ಹೆಜ್ಜೆಯಿಟ್ಟ, ಉತ್ತಮ ಗುಣಗಳಿದ್ದ ಮಹಿಳೆಯೊಬ್ಬಳು ಸಮಾಜದ ಶ್ರೀಮಂತ ಜಮೀನ್ದಾರರ ರಾಜಕೀಯ ಸಾರ್ಥಸಾಧನೆಗೆ ದಾಳವಾಗುವುದನ್ನು ಚಿತ್ರಿಸಿದ್ದಾರೆ. ಸಮಾಜದಲ್ಲಿ ಹೆಣ್ಣುಮಕ್ಕಳ ಯಶಸ್ಸಿನ ಹಾದಿ ಎಷ್ಟು ದುರ್ಗಮವೆಂಬುದನ್ನು ಕಥೆ ಸಾಬೀತುಗೊಳಿಸುತ್ತದೆ.

ಮೂಡಿ ಬರ್ತಾನಾ ಚಂದ್ರಮಾ ನೋಡ್ಯ – ಈ ಕಥೆಯಲ್ಲಿ ಗಂಗೆ ತನಗಾದ ಮಗುವನ್ನು ನೋಡಿ ತನ್ನ ಗಂಡ ಬೆಳ್ಳ್ಯಾನಲ್ಲಿ ಚಂದ್ರಮಾ

ಮೂಡಿ ಬರ್ಲಕ್ಹತ್ತಿಯಾನ... ಅನ್ನುತ್ತಾಳೆ. ಇಲ್ಲಿ ತನ್ನ ಮಗುವನ್ನೇ ಭಗವಂತನಿಗೆ ಹೋಲಿಸುತ್ತಾ, ಭಗವಂತನೇ ಚಂದ್ರಮನ ರೂಪದಲ್ಲಿ ಬರುತ್ತಿದ್ದಾನೆ ಎನ್ನುವಳು. ಅಲ್ಲದೆ ಈ ಕಥೆಯಲ್ಲಿ ಅನಾಥನಾದ ಬೆಳ್ಳಾಸ ಉದಾರತೆಯು ಕಂಡುಬರುತ್ತದೆ. ಬಂಗಲೆಯಲ್ಲಿ ವಾಸಿಸುವ ಶ್ರೀಮಂತರೆಮರು ಬೆಳ್ಳಾನ ಪರೋಪಕಾರಿ ಮನೋಭಾವ, ಅನುಕಂಪ, ಹೃದಯವಂತ, ಸಜ್ಜನಿಕೆ ಬಹಳ ಮೆಚ್ಚುವಂತದ್ದೇ ಆಗಿದೆ.

'ಈ ಲೋಕವೆಲ್ಲ ಘೋರ' ಅನ್ನುವ ಕಥೆಯಲ್ಲಿ ಬಡವನ ಆಸೆ ಚೂರು ಚೂರಾದ ಚಿತ್ರಣ ಕಂಡುಬರುತ್ತದೆ. ಬಡತನ ದಾರಿದ್ರ್ಯಕ್ಕೆ ಒಳಗಾದ ಬಡವರ ಬದುಕು ಎಷ್ಟು ಯಾತನೀಯ ಎಂಬ ಅಂಶವನ್ನು ಲೇಖಕಿ ಶಾಣಪ್ಪ, ನಾನ್ಯಾ, ಲವಂಗಿ ಪಾತ್ರದ ಮೂಲಕ ತೆರೆದಿಡುತ್ತಾರೆ.

ಮಾನಪಮಾನ ನಿಮ್ಮದಯ್ಯ – ಈ ಕಥೆಯಲ್ಲಿ ಸಮಾಜದ ಜನರ ಮನಸ್ಸು ಪರಿವರ್ತನೆ ಆಗದೆ ಸಮಾಜದಲ್ಲಿ ಸಮಾನತೆ ಬರುವುದಿಲ್ಲ. ಬಡವರಿಗೆ ಸವಾನತೆ ಎಲ್ಲಿದೆ ಎಂಬ ಪ್ರಶ್ನೆ ಈ ಕಥೆಯಿಂದ ಮೂಡಿಬರುತ್ತದೆ. ಯಾಜಮಾನ್ಯದ ನೆಲೆಗಳು ಸಾವ್ಕಾರನ ವರ್ತನೆಯಿಂದ ಕಂಡುಬರುತ್ತದೆ. ಅನ್ಯಜಾತಿಯ ವಿವಾಹವು ತಾಯಿಯನ್ನು ಬಲಿ ತೆಗೆದುಕೊಂಡಿತು. ಇದು ಎಂತಹ ಅನಾಹುತಕ್ಕೆ ಕಾರಣವಾಗುತ್ತದೆ ಎಂಬುದನ್ನು ಈ ಕಥೆಯಲ್ಲಿ ನೋಡಬಹುದು. ಬಸವಣ್ಣನ ಚಿಂತನೆ, ಅಂತರ್ ಜಾತೀಯ ಮದುವೆ ಈ ಕಥೆಯಲ್ಲಿ ನೋಡಬಹುದು. ಆ ಮೂಲಕ ಸಮಾಜದ ಪರಿವರ್ತನೆಯನ್ನು ಕಾಣಬಹುದು.

ಮಟದಯ್ಯ ಮತ್ತು ಧರ್ಮ – ಈ ಕಥೆಯಲ್ಲಿ ಧರ್ಮದ ಹೆಸರಿನಲ್ಲಿ ಅಧರ್ಮಕ್ಕೆ ಮಣೆ ಹಾಕುವ ಮಠಾಧಿಪತಿಗಳ ವಿಡಂಬನೆ ಇದೆ. ಧರ್ಮವನ್ನು ತನಗೆ ಬೇಕಾದಂತೆ ಬಳಸುವ ಮಠಾಧಿಪತಿಗಳ ಸ್ವಾರ್ಥ ಎದ್ದು ಕಾಣುತ್ತದೆ. ಮರಿಸಾಮಿ ಧರ್ಮರಕ್ಷಕನಾಗಿ ಜನರಿಗೆ ವಂಚಿಸುತ್ತಾನೆ. ಆಧ್ಯಾತ್ಮವನ್ನು ತನಗೆ ಬೇಕಾದಂತೆ ಬಳಸುವ ಮಠಾಧಿಪತಿಗಳ ಇನ್ನೊಂದು ಕರಾಳ ಮುಖ ಈ ಕಥೆಯಲ್ಲಿ ಕಂಡು ಬರುತ್ತದೆ.

ಬಂಡು ಕಥೆ – ಸ್ತ್ರೀ ಶಕ್ತಿಯನ್ನು ಬಿಂಬಿಸುವ ಕಥೆ. ಸಾಹುಕಾರನಿಂದ ಮೋಸ ಹೋದ ಲವಂಗಿ ಆತನು ಮಾಡಿದ ಗಾಂಜಾ ಕೆಲಸವನ್ನು ಪೋಲೀಸರಿಗೆ ತಿಳಿದು ಆತನಿಗೆ ಶಿಕ್ಷೆ ಕೊಡಿಸುತ್ತಾಳೆ. ಆ ಮೂಲಕ ತನ್ನಲ್ಲಿ ಹುದುಗಿದ್ದ ದ್ವೇಷವನ್ನು ಹೊರಹಾಕುವುದರ ಮೂಲಕ ತನ್ನ

ಮಗನಿಗೆ ವಿದ್ಯಾಭ್ಯಾಸ ಕೊಡಿಸುತ್ತಾಳೆ. ಇಲ್ಲಿ ಪ್ರಾಮಾಣಿಕತೆ ಅನ್ನುವುದು ಆಧ್ಯಾತ್ಮದ ಪ್ರತೀಕವಾಗಿ ಮೂಡಿಬಂದಿದೆ.

ಮತದವ್ವಕಥೆ – ನಂಬಿಕೆ ಮತ್ತು ವಾಸ್ತವಗಳು ಮುಖಾಮುಖಿಯಾಗುವ ಕಥೆಯನ್ನು ಇಲ್ಲಿ ಕಾಣಬಹುದಾಗಿದೆ. ಅನಾಥಳಾದ ಶಾಣಮ್ಮನನ್ನು ಊರಿನ ಸಮುದಾಯ ಮತದವ್ವ ಎಂದು ಆಕೆಯನ್ನು ನೋಡುವ ಚಿತ್ರಣ ವಿಶೇಷವಾದುದು. ಊರಿನ ಜನ ಅವಳನ್ನೇ ದೇವರೆಂದು ನಂಬುವ ಪ್ರಸಂಗ ವಿಚಿತ್ರವಾದುದು. ಜನರ ಆಧ್ಯಾತ್ಮದ ಕುರಿತ ಚಿಂತನೆಯೇ ಇಲ್ಲಿ ಭಿನ್ನವಾಗಿದೆ. ಶಾಣಮ್ಮ ತನ್ನ ಹಸಿವಿಗಾಗಿ ಬದುಕು ನಡೆಸುತ್ತಿದ್ದರೆ, ಊರಿನ ಜನ ಮಠ ಸ್ಥಾಪಿಸಿ ಭಜನೆ, ಸಂಕೀರ್ತನೆ ಮಾಡುವ ಪ್ರಸಂಗ ಒಂದು ರೀತಿಯಲ್ಲಿ ಭಿನ್ನತೆಯನ್ನು ಪ್ರಕಟಿಸುತ್ತದೆ.

ಕಮರಿಹೋಗುವ ಕೆಳಜನರು – ಕಥೆಯಲ್ಲಿ ಮೇಲುಜಾತಿಯವರ ಸೂತ್ರದ ಬೊಂಬೆಯಾಗಿ ಪ್ರಾಣ ತೆರುವ ಅಮಾಯಕ ಬಡಜನರ ಬದುಕಿನ ಕಹಿ ವಾಸ್ತವವನ್ನು ಅತ್ಯಂತ ಹೃದಯವೇಧಕವಾಗಿ ಚಿತ್ರಿತವಾಗಿದೆ. ಈ ಕತೆ 'ಭಾಳ ತಲೆಗೋಳದಿಂದ ಇದು ಹೀಗೇ ಬೆಳ್ದು ಬಂದಾದ ಮಗಾ ದೊಡ್ಡವರ ತಪ್ಪಿಗಿ ಸಣ್ಣವರ ತೆಲಿದಂಡಾ....' ಇಲ್ಲಿ ಅಮಾಯಕರನ್ನು, ನಿರಪರಾಧಿಯನ್ನು ಬಲಿತೆಗೆದುಕೊಂಡ ಗೌಡನು ಯಾಜಮಾನ್ಯದ ದರ್ಪತೆಯನ್ನು ಪ್ರದರ್ಶಿಸುವುದನ್ನು ನೋಡಬಹುದು.

ಸಾವು – ಕಥೆಯಲ್ಲಿ ಬೆಳ್ಳಿಯ ಶೋಷಣೆ ಕಂಡುಬರುತ್ತದೆ. ಗಂಡ ಇಸಕಂಟಪ್ಪ ನಿರಾಕರಿಸಿದರೂ, ಗಂಡನೇ ದೇವರೆಂದು ನಂಬಿದ ಆಕೆಯ ಭಕ್ತಿಯ ರೂಪ ವಿಭಿನ್ನವಾದುದು. ಯಾಕೆಂದರೆ ಆಕೆಯನ್ನು ಬಿಟ್ಟು ದೂರನಡೆದು ಮೂವತ್ತು ವರ್ಷ ಕಳೆದರೂ ಆಕೆ ಮಾತ್ರ ಗಂಡನೇ ದೇವರೆಂದು ನಂಬಿದವಳು. ಕಲ್ಲು ಮುಳ್ಳುಗಳ ಬದುಕಿನ ಹಾದಿಯಲ್ಲಿ ಆಕೆ ತಾಳಿಭಾಗ್ಯ ಎಂದು ತಾಳಿಯಲ್ಲಿ ದೇವರನ್ನು ಕಾಣುವ ಆಕೆಯ ಸಂಸ್ಕೃತಿ ವಿಶೇಷವಾದುದು. ತಳಸಮುದಾಯದ ಜನರ ಆಧ್ಯಾತ್ಮದ ಚಿಂತನಾಕ್ರಮ ವಿವಿಧ ರೂಪವನ್ನು ಈ ಕಥೆಯಲ್ಲಿ ಕಾಣಬಹುದು. ಹೆಣ್ಣಿನ ಬದುಕು ಕಷ್ಟವಾದರೂ, ಇನ್ನೊಂದು ಹೆಣ್ಣಿನಿಂದ ಶೋಷಣೆಗೆ ಒಳಗಾದರೂ ಅಲ್ಲಿ ಸಾಭಿಮಾನದಿಂದ ಬದುಕುವ ಆಕೆಯ ಬದುಕನ್ನು ಕಾಣಬಹುದಾಗಿದೆ. ತಾನು ಗಂಡನಿಂದ ನೋವು ಅನುಭವಿಸಿದರೂ, ಆತ ಸತ್ತಾಗ, ಇನ್ನೂ ನಾಲ್ಕು ವರ್ಷ ಬದುಕಬೇಕಾಗಿತ್ತು ಎಂದು ಹೇಳುವಳು. ಇಲ್ಲಿ ಹೆಣ್ಣಿನ ಹೃದಯ ವೈಶಾಲ್ಯತೆ ಎದ್ದುಕಾಣುತ್ತದೆ.

ಗೂಡಿನೊಳಗಿನ ಗುಟ್ಟು – ಕಥೆಯಲ್ಲಿ ಮಠದ ಅಧಿಪತಿಯಾದ ಮಾದೇವಯ್ಯನ ಅನೈತಿಕ ಚಟುವಟಿಕೆಗಳು ಮತ್ತು ಆತನ ಪತ್ನಿ ಸಾಂತಮ್ಮಳ ದೌರ್ಬಲ್ಯ, ದುಷ್ಟತನದ ಕೆಲಸ ಜಾತಿಯ ನೀತಿಯನ್ನು ಅತಿಕ್ರಮಿಸಿ ಮನುಷ್ಯನನ್ನು ಅನೈತಿಕ ಚಟುವಟಿಕೆಗಳಿಗೆ ತಳ್ಳುವುದನ್ನು ಕಾಣಬಹುದು. ಮುಖವಾಡದ ಬದುಕನನ್ನು ನಡೆಸುವ ಬ್ರಾಹ್ಮಣರಾದ ಮಠಾಧಿಪತಿಗಳು ಮಾಡುವ ಕೃತ್ಯಗಳು ಈ ಕಥೆಯಲ್ಲಿ ವಿಭಿನ್ನವಾಗಿ ಮೂಡಿಬಂದಿದೆ. ಇದು ಸಮಾಜದ ಜನರು ಗೌರವಿಸುವ ಸಂಸ್ಕಾರವಂತ ಬ್ರಾಹ್ಮಣ ಮನೆತನಕ್ಕೆ ಒಂದು ದೊಡ್ಡ ಸವಾಲಾಗಿದೆ.

ಗರ್ಭ – ಈ ಕಥೆಯಲ್ಲಿ ತಳಸಮುದಾಯದ ಹೆಣ್ಣನ್ನು ಶಿವಪುರದ ಈಸೂರಪ್ಪನ ಮಡದಿ ಗೌರಮ್ಮ ತನ್ನ ಸ್ವಾರ್ಥಕ್ಕೆ ಬಳಸಿಕೊಳ್ಳುತ್ತಾಳೆ. ತನಗೆ ಮಗುವಾಗದಾಗ ತಮ್ಮ ಮನೆಯಲ್ಲಿರುವ ಕೆಲಸದಾಕೆ ಮೂಲಕ ತನ್ನ ಗಂಡನನ್ನು ಒಪ್ಪಿಸಿ ಮಗು ಪಡೆಯಲು ಉಪಾಯ ಹೂಡುತ್ತಾಳೆ. ಇಲ್ಲಿ ದಲಿತ ಸಮುದಾಯದ ಹೆಣ್ಣು ಅನುಭವಿಸುವ ಶೋಷಣೆಯ ಮುಖ ನೋಡಬಹುದು. ಅಲ್ಲದೆ ಮೇಲ್ವರ್ಗದವರು ತಳಸಮುದಾಯದ ಸ್ತ್ರೀಯನ್ನು ಬಳಸಿಕೊಳ್ಳುವ ವಿಧಾನವನ್ನು ನೋಡಬಹುದು. ಆದರೆ ಮಗುವಿನ ತಾಯಿಯಾದ ಚಿಕ್ಕಿ ಕೊನೆಗೆ ತನ್ನ ಮಗುವನ್ನು ಎತ್ತಿಕೊಂಡು ಬೇರೆ ರೈಲು ಹತ್ತುವುದರ ಮೂಲಕ ಗೀತಾರವರು ಕರುಳಿನ ಸಂಬಂಧವನ್ನು ವಿವರಿಸುತ್ತಾರೆ.

ದುರಂತ – ಈ ಕಥೆಯಲ್ಲಿ ಮತಾಂತರ ಮತ್ತು ಮತಾಂತರಗೊಂಡವರ ಮಾನಸಿನ ಬೇಗುದಿಗಳನ್ನು ಬಹು ಸೂಕ್ಷ್ಮವಾಗಿಯೂ ಹೃದಯಸ್ಪರ್ಶಿಯಾಗಿಯೂ ಅನಾವರಣಗೊಳಿಸಲಾಗಿದೆ. ಗಂಗಾನಗರದ ಜೋಪಡಿಪಟ್ಟಿಯ ಮಾದೇವಿ ಆಕಸ್ಮಿಕವಾಗಿ ತೀರಿಹೋದಾಗ ಇಡೀ ಕೇರಿಗೆ ಕೇರಿಯೇ ಸಂಕಟಪಡುತ್ತದೆ. ಹೆಣದ ಅಂತಿಮ ದರ್ಶನವನ್ನು ಮಾಡಲು ಬಂದ ಸಲೀಂನ ಬೇಡಿಕೆಗೆ ಕೇರಿ ಜನಗಳು ಸುಮ್ಮನಾಗುತ್ತಾರೆ, ಅಲ್ಲದೆ ಕಿವುಡಾಗುತ್ತಾರೆ.

ಪುಂಡಿ ಪೂಜಾರಿಯಾದಾಗ – ಈ ಕಥೆಯಲ್ಲಿ ಬದಲಾದ ಸಾಮಾಜಿಕ ಚಿತ್ರಣವನ್ನು ನೋಡಬಹುದು. ದಲಿತ ಸಮುದಾಯದ ಪುಂಡಿ ದೇವಾಲಯದಲ್ಲಿ ಅರ್ಚಕನಾಗುವುದರ ಮೂಲಕ ಬದಲಾದ ದಲಿತರ ಸ್ಥಾನಮಾನದ ಸ್ಥಿತಿಯನ್ನು ನೋಡಬಹುದಾಗಿದೆ. ಪುಂಡಿಯ ಸಂಬಂಧಿಕರು ಹಾಗೂ ಮಡದಿ ಪುಂಡಿ ಅರ್ಚಕನಾಗುವುದನ್ನು

ನಿರಾಕರಿಸಿದರೂ ಮುಂಡಿ ತಾನು ಸರಕಾರದಿಂದ ನೇಮಕ ಆಗಿದ್ದಾನೆಂದು ತಿಳಿದು ಕೈ ಜೋಡಿಸುತ್ತಾನೆ. ಮರಗವ್ವನ ಗುಡಿಯ ಪೂಜಾರಿಯಾಗಿದ್ದ ಮುಂಡಿ ಲಕ್ಷ್ಮೀ ಗುಡಿಯ ಪೂಜಾರಿಯಾಗುತ್ತಾನೆ.

ಶತಶತಮಾನಗಳಿಂದ ಭಾರತೀಯ ಸಮಾಜದಲ್ಲಿ ಬೇರೂರಿದ್ದ ಅಸಮಾನತೆಯ ವ್ಯವಸ್ಥೆಯನ್ನು ಪರಿವರ್ತಿಸಬೇಕಾದ ಅಗತ್ಯವನ್ನೂ, ಹಾಗೆ ಪರಿವರ್ತಿಸುವಾಗ ಎದುರಿಸಬೇಕಾಗುವ ಸಮಸ್ಯೆಗಳನ್ನೂ ಈ ಕತೆ ಅತ್ಯಂತ ಮಾರ್ಮಿಕವಾಗಿ ನಿರೂಪಿಸಿದೆ. ಸೀನಾಪ್ಪಾಚಾರಿಯ ರೋಷವನ್ನು ವರ್ಣಿಸಿದ ರೀತಿ ಅದ್ಭುತವಾಗಿದ್ದು ಕತೆಗಾರ್ತಿಯ ವರ್ಣನೀಯ ಕೌಶಲಕ್ಕೆ ಸಾಕ್ಷಿಯಾಗುತ್ತದೆ.

'ಬಂದ್' – ಕತೆಯಲ್ಲಿ ಬೇಲೂ ಎಂಬ ಬಾಲಕ ತನ್ನ ತಂದೆಯ ಸಾವಿನ ನಂತರ ಮನೆಯ ಎಲ್ಲಾ ಜವಾಬ್ದಾರಿಯನ್ನು ನೋಡಿಕೊಳ್ಳುತ್ತಾನೆ. ತಾಯಿಯ ಶುಶ್ರೂಷೆಗಾಗಿ ಸಾಕಷ್ಟು ಹಣ ಖರ್ಚು ಮಾಡುತ್ತಾನೆ. ಆದರೆ ಆತ ಅಸಹಾಯಕರ ರಕ್ಷಣೆಗೆ ಧಾವಿಸಿ ರಸ್ತೆಯಲ್ಲಿ ಗುಂಡಿಗೆ ಬಲಿಯಾಗಿ ಹೆಣವಾಗುತ್ತಾನೆ. ಯಾರದೋ ದ್ವೇಷಕ್ಕೆ, ಯಾರದೋ ಸೇಡಿಗೆ, ಸಿಟ್ಟಿಗೆ ಮುಗ್ಧ ಅಮಾಯಕ ಜನರ ಸಾವು, ನೋವು ಆಗುವುದನ್ನು ನೋಡಬಹುದು. ಗಂಡನೂ ಇಲ್ಲದೆ, ಇದ್ದೊಬ್ಬ ಮಗನಲ್ಲೇ ಜೀವವಿಟ್ಟುಕೊಂಡಿದ್ದ ಮಲಕವ್ವನ ನೋವು ನಷ್ಟಗಳಿಗೆ ಪರಿಹಾರವೆಲ್ಲಿದೆ? ಅವಳ ಒದ್ದಾಟ, ಕಣ್ಣೀರುಗಳಿಗೆ ತಾವೂ ಒಂದಷ್ಟು ಸೇರುತ್ತ ಜೋಪಡಿಗಳ ಜನರು ಸರಿದು ಹೋಗುತ್ತಾರೆ.

80ರ ದಶಕದ ನಂತರ ಸಾಹಿತ್ಯ ರಚಿಸಿದ ಗೀತಾರವರು ಶೋಷಣೆಯ ವಿರುದ್ಧ ದಂಗೆಯ ಬರವಣಿಗೆಯನ್ನು ಆರಂಭಿಸಿದರು. ಜೋಗಿಣಿಯರ ಜೀವನದ ನಿಯಮಗಳು ಅತಿನಿಷ್ಠುರ. ಜೋಗಿಣಿ, ತಲೆಮೇಲೆ ದೇವಿಪರಡಿ ಎಂಬ ಅಗಲವಾದ ಬುಟ್ಟಿಹೊತ್ತು, ಕೊರಳಿನಲ್ಲಿ ಕವಡೆಸರ, ಬೆಳ್ಳಿಯ ಪದಕಗಳನ್ನು ಧರಿಸಿ, ಬಗಲಲ್ಲಿ ಚೌಡಕಿ ಹಿಡಿದು ಬಾರಿಸುತ್ತ ಊರೂರು, ಗಲ್ಲಿಗಲ್ಲಿ ಸುತ್ತುತ್ತಾ, ಹಾಡುತ್ತಾ ಭಿಕ್ಷೆ ಬೇಡಬೇಕು. ರಾತ್ರಿಯಾದರೆ ತನ್ನನ್ನು ಬಯಸಿದ ಗಂಡಸಿಗೆ ಸೆರಗು ಹಾಸಬೇಕು. ಒಮ್ಮೆ ಜೋಗಿಣಿಯಾದವಳು, ಯಾವುದೇ ಕಾರಣಕ್ಕೂ ಮತ್ತೆ ಮದುವೆಯಾಗುವಂತಿಲ್ಲ. ಮದುವೆ ಮಾಡಿಕೊಳ್ಳುವ ಗಂಡುಗಳು ಸಿಗಬೇಕಲ್ಲ. ಅವಳಿಗೆ ಹುಟ್ಟುವ ಮಕ್ಕಳಿಗೆ ತಂದೆಯ ಹೆಸರು ತಿಳಿದಿರುವುದೂ ಇಲ್ಲ, ಹೆಸರು ಸಿಗುವುದೂ ಇಲ್ಲ. ಜೋಗಿಣಿಯರು ಸೇಂದಿ ದುಕಾನುಗಳಲ್ಲಿ ತಾವೂ ಕುಡಿದು, ಬೀಡಿ ಸೇದಿ, ಅಲ್ಲಿ ಬರುವ ಗಂಡಸರ ಕಾಮತೃಷೆ ತೀರಿಸುವ ಸಾಧನವಾಗಿ ಬದುಕುತ್ತಾರೆ.

ಧೈರ್ಯವಿದ್ದವರು ಆತ್ಮಹತ್ಯೆಗೆ ಶರಣಾಗುತ್ತಾರೆ. ಇಲ್ಲದಿದ್ದಲ್ಲಿ, ಸೂರು ರೋಗಗಳ ಬೀಡಾಗಿ, ನಿರ್ಗತಿಕರಾಗಿ, ಬೀದಿಯ ಹೆಣವಾಗುತ್ತಾರೆ.

ಜೋಗತಿ ಸಂಪ್ರದಾಯದ ಮತ್ತೊಂದು ಆಯಾಮವನ್ನು, ಗೀತಾರವರು ದುರ್ಗಿ ಮರ್ಗಿ ಎಂಬ ಅವಳಿ ಸೋದರಿಯರ ಚಿತ್ರಣದಿಂದ, ತೆರೆದಿಡುತ್ತಾರೆ. ಮಾದಾರಕೇರಿಯ ಮಾನಿಂಗ ಮಕ್ಕಳಿಗಾಗಿ ಹರಕೆ ಮಾಡಿಕೊಂಡು ಮೊದಲು ಹೆಣ್ಣು ಸಂತಾನವಾದರು, ಜೋಗಿಣಿ ಮಾಡುವುದಾಗಿ ಬೇಡಿಕೊಂಡಿರುತ್ತಾನೆ. ಅವಳಿಗೆ ಹೆಣ್ಣು ಮಕ್ಕಳಾದಾಗ ಊರಿನ ಹಿರಿಯರು ಇಬ್ಬರನ್ನೂ ಜೋಗಿಣಿಯರನ್ನಾಗಿ ಮಾಡಬೇಕೆಂದು ತೀರ್ಮಾನಿಸುತ್ತಾರೆ. ಅಕ್ಕತಂಗಿಯರಿಬ್ಬರೂ ಸಂತೆ ಸಂತೆಯಲ್ಲಿ ಹಾಡುತ್ತಾ, ಸೇಂದಿ ದೂಕಾನುಗಳಲ್ಲಿ ಕುಡಿಯುತ್ತಾ ಬದುಕು ಸವೆಸುತ್ತಾರೆ. ಜೋಗಿಣಿಯರ ಮತ್ತೊಂದು ಮುಖವನ್ನು ಜಂಬಗಿಯ ಮುದಿ ಜೋಗಿಣಿ ನಿಂಬವ್ವಾಯಿಯಲ್ಲಿ ಕಾಣುತ್ತೇವೆ. ನಿಂಬವ್ವಾಯಿಗೆ ಈ ವ್ಯವಸ್ಥೆಯ ಹಿಂದೆ ಇರುವ ಪೂಜಾರಿ, ಕುಲಕರ್ಣಿ, ಶಟ್ರು, ಸಾವ್ಕಾರರ ಸಂಚಿನ, ಹಿಕಮತ್ತಿನ ಅರಿವಿದೆ, ಜೊತೆಗೆ ಯಾವ ಹೆಣ್ಣು ದೈವವೂ ಹೆಣ್ಣು ಮಕ್ಕಳನ್ನು ಸೂಳೆಯರಾಗಿ ಎಂದು ಹೇಳುವ ಕ್ರೌರ್ಯ ತೋರುವುದಿಲ್ಲವೆಂಬ ಅರಿವಿದೆ. ಆದರೆ ವ್ಯವಸ್ಥೆಯನ್ನು ಎದುರಿಸುವ ಧೈರ್ಯವಾಗಲೀ, ತನ್ನ ಕಾಲಮೇಲೆ ತಾನು ನಿಲ್ಲುವ ಸಾಮಾಜಿಕ ಭಾವನಾತ್ಮಕ ಭದ್ರತೆಗಳಾಗಲೀ ಅವಳಿಗಿಲ್ಲ. ಇಸಾ ತಗೊಂಡು ಸಾಯೋದು ಬೇಕು, ಜೋಗಿಣಿಯಾಗೋದು ಬೇಡಪ್ಪಾ ಎಂದು ಚಿಕ್ಕ ವಯಸ್ಸಿನ ಜೋಗಿಣಿ ತುಳಾಜಾಗೆ ವಿವರಿಸಿ, ತುಳಜಾ ತನ್ನ ಬದುಕಿನಲ್ಲಿ ಸರಿಯಾದ ನಿರ್ಧಾರ ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳಲು ನೆರವಾಗುತ್ತಾಳೆ.

ಗೀತಾರವರ ಅನುಭವಗಳ ವಿಶಾಲತೆಯನ್ನು ದರ್ಶಿಸುವ ಕಥಾ ಪಾತ್ರಗಳ ಬಗ್ಗೆ ಸಹೃದಯರನ್ನು ಕಾಡುವ ಒಂದು ಪ್ರಶ್ನೆಯಿದೆ. ಒಂದು ಪಾತ್ರದ ಗುಣರೂಪ ವರ್ಣನೆ ಆ ಪಾತ್ರದ ನಡವಳಿಕೆಗಳೊಂದಿಗೆ ಸಾವಯವಗೊಳ್ಳಬೇಕಾದುದು ಕಥಾಶಿಲ್ಪದ ದೃಷ್ಟಿಯಿಂದ ಅಗತ್ಯವಾಗುತ್ತದೆ. ಆದರೆ ಇಲ್ಲಿನ ಕೆಲವು ಮಹಿಳಾ ಪಾತ್ರಗಳು ತಮ್ಮ ಗುಣ, ರೂಪ, ನಡೆ, ನುಡಿಗಳಲ್ಲಿ ಅನನ್ಯರಾಗಿ ವರ್ಣಿತರಾಗಿದ್ದರೂ ಕಾದಂಬರಿಯ ವೇದಿಕೆಯಲ್ಲಿ ಆ ಅನನ್ಯತೆಯನ್ನು ಕಾಪಾಡಿಕೊಳ್ಳುವುದಿಲ್ಲ. ಅವರ ಆದರ್ಶ, ಆವೇಶಗಳು ಪಾತ್ರಗಳ ಒಳಗಿನ ಜೀವದ್ರವ್ಯವಾಗದೆ ಹೊರಗಿನಿಂದ ಆರೋಪಿಸುವ ಮೌಲ್ಯವಾಗಿ ಮಾತ್ರ ನಿಂತುಬಿಡುತ್ತದೆ. ಕೆಲವು ಪಾತ್ರಗಳು ಹದಿ ಹರೆಯದಲ್ಲಿ ಜೀವನೋತ್ಸಾಹ ಮತ್ತು ಜೀವನ ಪ್ರೀತಿಗಳನ್ನು ಮೊಗಮೊಗೆದು

ಅನುಭವಿಸಿದರೂ ಮಧ್ಯವಯಸ್ಸು ದಾಟುವುದರೊಳಗೆ ಎಲ್ಲವನ್ನೂ ಕಳೆದುಕೊಂಡು ನಿರ್ಜೀವವಾಗುತ್ತವೆ. ಬದುಕಿನ ಕಹಿ ಅನುಭವಗಳು ಅವರನ್ನು ಜಜ್ಜಿಹಿಂಡಿ ಹಣ್ಣು ಮಾಡಿದರೂ ಅವರೊಳಗಿನ ಅದಮ್ಯವಾದ ಜೀವನಲಾಲಸೆ ಅಚ್ಚರಿ ಹುಟ್ಟಿಸುತ್ತದೆ. ನಿಮ್ನ ಬದುಕಿನ ಮೌಢ್ಯಾಚರಣೆ ಹಾಗೂ ಲಿಂಗ ಸಮಸ್ಯೆಯ ಬಗ್ಗೆ ಇನ್ನಿಲ್ಲದಷ್ಟು ಚಿಂತನೆಯ ಕ್ಷಕಿರಣಗಳನ್ನು ಹರಿಯಬಿಟ್ಟ ಗೀತಾರವರು ಶೋಷಿತಲೋಕದ ಇತರ ಆಯಾಮಗಳ ಬಗ್ಗೆಯೂ ತಮ್ಮ ಆಯುಧವನ್ನು ಹರಿತಗೊಳಿಸಬಹುದಿತ್ತು ಎನಿಸುತ್ತದೆ.

ಸುಕನ್ಯ ಮಾರುತಿ, ಮಲ್ಲಿಕಾ ಘಂಟಿ, ಬಿ.ಟಿ. ಲಲಿತಾ ನಾಯಕ್, ಧರಣಿದೇವಿಯುವರಂಥ ಮೊದಲ ಘಟ್ಟದ 'ದಲಿತ ಕವಯತ್ರಿ ಬರಹಗಾರ್ತಿಯರೊಂದಿಗೆ ದು. ಸರಸ್ವತಿ, ಉಮಾ ಎಚ್., ಸಮತಾ ದೇಶಮಾನೆ, ಮಿತಾ ದೇವನೂರು, ವೀಣಾ ವೇಟಕುರ್ಕ, ಅನಸೂಯ ಕಾಂಬಳೆಯುಂಥವರು ದಲಿತೀಯ ಚಿಂತನೆಯ ಮಾರ್ಗದಲ್ಲಿ ಒಂದಾಗಿದ್ದಾರೆ. ಆದರೆ ದಲಿತ ಸಾಹಿತ್ಯದೊಂದಿಗಿನ ಸ್ತ್ರೀವಾದಿ ನೆಲೆಯನ್ನು ನೋಡಬೇಕಾಗಿದೆ.

'ಎಂ.ಕೆ. ಇಂದಿರಾ'ರವರ 'ಫಣಿಯಮ್ಮ' ಕಾದಂಬರಿ ಒಂದು ಆಧುನಿಕತೆಯ ಪ್ರತೀಕವಾಗಿ ಮೂಡಿಬಂದಿದೆ. ಬ್ರಾಹ್ಮಣ ವಿಧವೆಯಾದರೂ, ಮಡಿ ಅಂತ ಆರಂಭದಲ್ಲಿ ಇದ್ದರೂ ನಂತರ ಆಕೆ ನೂರಾರು ಸ್ತ್ರೀಯರಿಗೆ ಹೆರಿಗೆ ಮಾಡಿಸುತ್ತಾಳೆ. ಹೀಗೆ ಜಾತಿ ವ್ಯವಸ್ಥೆಯನ್ನು ಮುರಿಯುವಲ್ಲಿ ಯಶಸ್ವಿಯಾಗುತ್ತಾಳೆ. ಎಷ್ಟೋ ಹೆಣ್ಣು ಮಕ್ಕಳಿಗೆ ಜೀವ ನೀಡಿದ ಜೀವದಾನಿಯಾಗಿ ಮೂಡಿಬರುತ್ತಾಳೆ. ಈಕೆ ಪರಂಪರೆಯನ್ನು ಒಡೆಯುವ ಕೆಲಸ ಮಾಡುತ್ತಾಳೆ.

'ಕುಸುಮಬಾಲೆ'ಯಲ್ಲಿ ಬರುವ ಹೆಣ್ಣು ಆಕೆ ಸಮಾಜದ ನಿರ್ದೇಶನವನ್ನು ಪಾಲಿಸುತ್ತಾಳೆ. ಬೇಂದ್ರೆಯವರ 'ಪುಟ್ಟವಿಧವೆ ಕವನ' – ಚಿಕ್ಕವಯಸ್ಸಿನಲ್ಲಿ ವಿಧವೆ, ಕೇಶಮುಂಡನ, ಮದುವೆಗೆ ಹೋಗದಂತೆ ಮಾಡುವುದು – ಇಲ್ಲಿ ಹೆಣ್ಣಿನ ಶೋಷಣೆಯ ಬೇರೆ ಬೇರೆ ಮುಖಗಳನ್ನು ನೋಡಬಹುದು.

ಒಂದು ಸ್ಥಾಪಿತವಾದ ಸಮಾಜದಲ್ಲಿದ್ದು ಬಾಳಿ ಬದುಕುವ ಹೆಣ್ಣಿನ ಚಿತ್ರಣಗಳು 'ಮೊಗಳ್ಳಿ ಗಣೇಶ'ರವರ ಕಥಾಸಾಹಿತ್ಯದಲ್ಲಿ ಕಂಡುಬರುತ್ತದೆ. 'ಒಂದು ಹಳೆಚಡ್ಡಿ', 'ಭೂಮಿಬುಗುರಿ', 'ಅಲ್ಲಿ ಆ ಅಳು ಈಗಲೂ' ಮೊದಲಾದ ಅನೇಕ ಕಥೆಗಳು ಅದನ್ನೇ ಬಿಂಬಿಸುತ್ತವೆ. ಆದರೆ ಕೆಲವೊಂದು

ಕತೆಗಳು ಬದಲಾದ ವ್ಯವಸ್ಥೆಯನ್ನೂ ಚಿತ್ರಿಸುತ್ತ ಸಾಗುತ್ತವೆ. ಒಟ್ಟು ಕಥೆಗಳಲ್ಲಿ ಬರುವ ಹೆಣ್ಣಿನ ಚಿತ್ರಣವನ್ನು ಪರಿಶೀಲಿಸುವುದು ಮುಖ್ಯ ಉದ್ದೇಶವಾಗಿದೆ. ಬೇರೆ ಬೇರೆ ಕಥೆ, ಕಾದಂಬರಿ, ನಾಟಕಗಳೊಂದಿಗೆ ಸಮೀಕರಿಸಿದಾಗ ಮೊಗಳ್ಳಿ ಗಣೇಶರವರ ಕಥೆಗಳಲ್ಲಿ ಬರುವ ಹೆಣ್ಣಿನ ಚಿತ್ರಣ ಸ್ಥಾಪಿತವಾದ ಸಮಾಜದ ಪಾತ್ರಗಳೇ ಆಗಿ ಕೆಲವು ಮೂಡಿಬಂದರೆ ಕೆಲವು ಪಾತ್ರಗಳು ಬದಲಾದ, ಕಾಲಘಟ್ಟಕ್ಕೆ ತಕ್ಕಂತೆ ಪರಿವರ್ತಿತವಾದ ಪಾತ್ರಗಳೂ ಕಂಡುಬರುತ್ತವೆ.

ಮೊಗಳ್ಳಿ ಗಣೇಶರವರ "ನಾದದ ನದಿ" ಕಥೆಯಲ್ಲಿ ಮೊಗಳ್ಳಿ ಗಣೇಶರವರು – ಗೀಜುಗನ ಜೀವನದಲ್ಲಿ ವಾರಿಜ ಇಲ್ಲದ ಜೀವನ ಇಲ್ಲ ಎಂದು ಚಿತ್ರಿಸುತ್ತಾರೆ. ಹೆಣ್ಣಿಲ್ಲದ ನನ್ನ ಬದುಕು ದುಃಖಿತಪ್ತ, ವ್ಯರ್ಥ, ನೀರಸ..... ಎಂದು ಗೀಜುಗನಿಗೆ ಅನಿಸುತ್ತದೆ. ಇದು ಬದಲಾದ ಸಾಮಾಜಿಕ ಸ್ಥಿತಿ ಎಂದರೆ ತಪ್ಪಾಗಲಾರದು.

ಬಿ.ಟಿ ಲಲಿತನಾಯಕ್ ಅವರ 'ಹಬ್ಬ' ಕತೆಯಲ್ಲಿ ಮಾರಿಗುಡಿ ಚಿತ್ರಣ, ಅಲ್ಲಿ ಕಥೆಗಾರರ ಅತ್ತೆ ಮಾರಮ್ಮನಂತೆ ಕೆಂಡದ ಹಾದಿಯಲ್ಲಿ

ನುಗ್ಗಿ ತಾನೇ ಬೆಂಕಿಯ ದೇವತೆಯಂತೆ ಕಾಣಿಸುವುದು ಕೊನೆಗೆ ಅತ್ತೆ ಮಾಯವಾಗುವುದು. ಇಲ್ಲಿ ಹೆಣ್ಣು ತನ್ನನ್ನು ಹಬ್ಬ ಆಚರಣೆಯಲ್ಲಿ ತೊಡಗಿಸುವ ಅಂಶ ವ್ಯಕ್ತವಾಗುತ್ತದೆ.

ಮು.ನ. ಜವರಯ್ಯನವರ 'ವಾಗಿ' ಕಾದಂಬರಿ ದಲಿತ ಮಹಿಳೆಯೊಬ್ಬಳ ಉತ್ಕಟ ಬದುಕಿನ ಅನಾವರಣವಾಗಿದೆ. ಬದುಕಿಗೆ ಬೆನ್ನುಹಾಕದೇ ಛಲದಿಂದ ಹೋರಾಡುವ ಜೀವನೋತ್ಸಾದೊಂದಿಗೆ ದಲಿತೀಯತೆಯ ಅನುಭವಗಳನ್ನು ಕಟ್ಟಿಕೊಡುತ್ತದೆ. ಇಲ್ಲಿ ಸ್ತ್ರೀಯ ಅಂತಃಸತ್ವವನ್ನು ಪ್ರಧಾನವಾಗಿಟ್ಟುಕೊಂಡರೂ ಕೌಟುಂಬಿಕ ಬದುಕಿನ ಪಾಲನಶಕ್ತಿಯೂ ಪ್ರತಿನಿಧಿತವಾಗಿದೆ. ಇದರೊಂದಿಗೆ ಗಂಡ ಕೊಡುವ ಕಿರುಕುಳ, ಅತ್ತೆ ನಾದಿನಿಯರು ಸಾಧಿಸುವ ವೈರ, ಭಾವ – ಮೈದುನರ ಹಿಂಸೆ, ಈ ಎಲ್ಲಾ ಕಲಹದ ನಡುವೆ ಆಕೆ ಯಶಸ್ವೀ ಹೆಣ್ಣಾಗಿ ಮೂಡಿಬಂದಿದ್ದಾಳೆ. ದಲಿತ ಹೆಣ್ಣಿನ ಯಶಸ್ವೀ ಬದುಕನ್ನು ಇಲ್ಲಿ ನೋಡಬಹುದು.

'ಕೊಡಗಿನ ಗೌರಮ್ಮ'ರ 'ವಾಣಿಸಮಸ್ಯೆ', 'ಸಾರಾ'ರವರ 'ಸಹನಾ', 'ತ್ರಿವೇಣಿ'ಯವರ 'ಅಪಸ್ವರ–ಅಪಜಯ', ಕಾರಂತರ 'ಅಜ್ಜಿ.....' ಹೀಗೆ

ಅನೇಕ ಕೃತಿಗಳು ಸಂಪ್ರದಾಯ ಸ್ವಸ್ಥಸಮಾಜವನ್ನು ಪ್ರಶ್ನಿಸಿ ಹೊಸ ಸಮಾಜವನ್ನು ಕಟ್ಟುವಲ್ಲಿ ಮುಂದಾಗುತ್ತಾರೆ.

ಈವರೆಗಿನ ವಿವೇಚನೆಯ ಪರಿಣಾಮವಾಗಿ ಇಷ್ಟು ಹೇಳಬಹುದು ಪುರುಷ ನಿರ್ಮಿತ ವ್ಯವಸ್ಥೆಯಲ್ಲಿ ರೂಪು ತಳೆದ ಕನ್ನಡ ಸಾಹಿತ್ಯದಲ್ಲಿ ಕೇವಲ ಪುರುಷರ ಅಧೀನದ ವಸ್ತುಗಳಾಗಿ ರೂಪು ಪಡೆದ ಸ್ತ್ರೀಯರು ಸ್ವತಂತ್ರ ವ್ಯಕ್ತಿತ್ವಗಳ ಕ್ರಿಯಾಶೀಲತೆಯನ್ನು ಸೂಚಿಸುವಂತಹದ್ದು ಮಾನವತಾವಾದದ ಆವಿಷ್ಕಾರದೊಂದಿಗೆ ಊಳಿಗವಾನ್ಯದಿಂದ ಬಂಡವಾಳ ಶಾಹಿಯೆಡೆಗೆ, ರಾಜಸತ್ತೆಯಿಂದ ಪ್ರಜಾಸತ್ತೆಯ ಕಡೆಗೆ, ಬದಲಾಗತೊಡಗಿದ ಸಮಾಜದ ಸ್ಥಿತಿಗಳಿಗೆ ಸ್ಪಂದಿಸುತ್ತಾ ಬರುತ್ತಿರುವ ಲೇಖಕರ ಸ್ತ್ರೀಪರ ಧೋರಣೆಗಳಲ್ಲಿ ಕಂಡುಬರುವ ವ್ಯತ್ಯಾಸಕ್ಕೂ ಸಾಮಾಜಿಕ ಬದಲಾಗುತ್ತಿರುವ ಸ್ತ್ರೀ ವ್ಯಕ್ತಿತ್ವದ ಆಯಾಮಗಳಿಗೂ ಪರೋಕ್ಷ ಸಂಬಂಧವಿದೆ.

ಒಟ್ಟಿನಲ್ಲಿ ಗೀತಾರವರು ಕಥೆ, ಕಾದಂಬರಿಗಳ ಮೂಲಕ ಕನ್ನಡ ಸಾರಸ್ವತ ಲೋಕಕ್ಕೆ ಶಿಷ್ಟಸಮಾಜ ಅಸಹ್ಯ ಪಡುತ್ತಿದ್ದ ಲೋಕವೊಂದರ ಅತಿ ಸೂಕ್ಷ್ಮವಾದ ನೋವಿನ ನೆಲೆಗಳನ್ನು ಆರ್ತತೆಗಳನ್ನೂ ಆಪ್ತವಾಗಿಯೂ ರೋಮಾಂಚನಕಾರಿಯಾಗಿಯೂ ದರ್ಶನ ಮಾಡಿಸಿದ್ದಾರೆ. ದಲಿತ ಸಂವೇದನೆ ಹಾಗೂ ಮಹಿಳಾ ಶೋಷಣೆಗೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದಂತೆ ಈ ಬಹುಮುಖೀ ಸಂಸ್ಕೃತಿಯ ಸಮಾಜ ಅಪೇಕ್ಷಿಸಬಹುದಾದ ಸುಧಾರಣೆಯ ಹೊಸ ಶೋಧವನ್ನು ನಡೆಸಿದ್ದಾರೆ. ಹತಾಸೆಯ ಕತ್ತಲಲ್ಲಿ ಆಸೆ, ಭರವಸೆಗಳ ಬೆಳಕನ್ನು ತುಂಬಿದ್ದಾರೆ. ಕನ್ನಡ ಸಾಹಿತ್ಯ ಚರಿತ್ರೆಯ ದಲಿತ ಪ್ರಜ್ಞೆ ಹಾಗೂ ಸ್ತ್ರೀವಾದಿ ಪರಂಪರೆಯ ಹಾದಿಯಲ್ಲಿ ಮೈಲಿಗಲ್ಲುಗಳಾಗಿ ದಾಖಲಾಗಬಲ್ಲ ಮಹತ್ವದ ಕಾಣಿಕೆಗಳನ್ನು ನೀಡಿದ್ದಾರೆ.

ಫಲಿತಗಳು

ಒಟ್ಟಿನಲ್ಲಿ ಗೀತಾ ನಾಗಭೂಷಣರವರ ಕಥಾ ಸಾಹಿತ್ಯದಲ್ಲಿ ಸಾಮಾಜಿಕತೆ ಬಗ್ಗೆ ಹೀಗೆ ಗ್ರಹಿಸಬಹುದು:

1. ತಳ ಸಮುದಾಯದ ಸಾಮಾಜಿಕ ಚಿತ್ರಣ, ಮನಸ್ಸಿನ ದುಃಖ, ಹತಾಶೆ, ನೋವು, ತಾಕಳಾಟ ಮತ್ತು ಮನೆಯ ಒಡೆಯನಿಂದ

ಶಿಕ್ಷಣಕ್ಕೆ ಗುರಿಯಾಗುವಿಕೆ. ಹೆಣ್ಣನ್ನು ಪುರುಷ ಪ್ರಧಾನ ಸಮಾಜ ನೋಡುವ ರೀತಿಯನ್ನು ಕಥೆಗಳಲ್ಲಿ ವ್ಯಕ್ತವಾಗುತ್ತವೆ.

2. ಪ್ರಸ್ತುತ ಸಮಾಜದಲ್ಲಿ ಸಮಾಜದ ಶ್ರೀಮಂತ ಜಮೀನ್ದಾರರ ರಾಜಕೀಯ ಸಾರ್ಥಸಾಧನೆಗೆ ದಾಳವಾಗುವ ಚಿತ್ರಣ

3. ಹೊಸ ಸಾಮಾಜಿಕ ವ್ಯವಸ್ಥೆಯು ಗಂಡನಿಗೆ ನೆರವು ನೀಡಲು ಹೆಣ್ಣು ಕೂಡಾ ದುಡಿಯುವಿಕೆ ಆದರೆ ಸಾಮಾಜಿಕ ಚೌಕಟ್ಟಿನ ನೆಲೆಯಲ್ಲೇ ಮುಂದುವರೆಯುವುದು ಕೊನೆಗೂ ಆಕೆಯ ಅಸ್ಮಿತೆಯಿರುವುದು ಸಾಂಸಾರಿಕ ಜೀವನ ತೂಗಿಸುವ ಜಾಣ್ಮೆಯಲ್ಲಿ ಮಾತ್ರ ಎಂದು ವ್ಯಕ್ತವಾಗುತ್ತದೆ.

4. ಮತಾಂತರ ಮತ್ತು ಮತಾಂತರಗೊಂಡವರ ಮನಸ್ಸಿನ ಬೇಗುದಿಗಳನ್ನು ವಿವರಿಸುವ ಚಿತ್ರಣ, ಧರ್ಮದ ಚಿತ್ರಣ

ಮುಖ್ಯವಾಹಿನಿಯಲ್ಲಿ ಕಾಣಿಸದ ತಳಸ್ತರದ ಹೆಣ್ಣುಮಕ್ಕಳಿಗೆ ಮೇಲ್ಜಾತಿ ವರ್ಗದವರಿಂದ ವಿವಿಧ ಮುಖಗಳ ಶೋಷಣೆಯಿಂದ ತನ್ನ ಅಸ್ತಿತ್ವವನ್ನು ಕಾಯ್ದುಕೊಳ್ಳುವಲ್ಲಿ ವಿಫಲನಾಗುವುದು.

5. ಮುಖ್ಯವಾಹಿನಿಯ ಕಥಾಸಾಹಿತ್ಯದಲ್ಲಿ ಚಿತ್ರಿತವಾಗುವ ಮಹಿಳೆಯರಿಗಿಂತ ಈ ಕಥನದಲ್ಲಿ ಚಿತ್ರಿತವಾಗಿರುವ ಮಹಿಳೆಯರ ಲೋಕ ಹೇಗೆ ಭಿನ್ನ ಎಂದು ಗುರುತಿಸಬಹುದು.

6. ಮೇಲ್‌ಸ್ತರದ ಸಮುದಾಯದವರಿಂದ ಮೇಲ್‌ಜಾತಿ ಹೆಣ್ಣುಮಗಳು ಶೋಷಣೆಗೊಳಗಾಗಿದ್ದರಿಂದ ತನ್ನ ಸಾತಂತ್ರ್ಯವನ್ನು ಕಳೆದುಕೊಳ್ಳುವ ಅಂಶ ವ್ಯಕ್ತವಾಗುತ್ತದೆ.

7. ಬಡವನ ಆಸೆ ಚೂರು ಚೂರಾದ ಚಿತ್ರಣ ಹಾಗೂ ಬಡತನ, ದಾರಿದ್ರ್ಯಕ್ಕೆ ಒಳಗಾದ ಬಡವರ ಬದುಕು ಎಷ್ಟು ಯಾತನೀಯ ಎಂಬ ಅಂಶವನ್ನು ಒಳಗೊಂಡಂತೆ ಹಲವಾರು ಸಾಮಾಕ ಸಂಬಂಧಗಳನ್ನು ವಿವರಿಸುತ್ತಾರೆ.

ಪರಾಮರ್ಶನ ಗ್ರಂಥಗಳು

1. ಡಾ. ಪ್ರಮೀಳಾ ಮಾಧವ್, ಗೀತಾ ನಾಗಭೂಷಣ, ಕರ್ನಾಟಕ ಸಾಹಿತ್ಯ ಅಕಾಡೆಮಿ, 2016

2. ಡಾ. ಗಾಯತ್ರಿ ನಾವಡ, ಭಾರತೀಯ ಸ್ತ್ರೀವಾದ : ಒಂದು ಸಂಕಥನ, ಕನ್ನಡ ವಿಶ್ವವಿದ್ಯಾಲಯ ಹಂಪಿ, 2000

3. ಕೆ. ಫಣಿರಾಜ್, ಆಂಟೋನಿಯೋ ಗ್ರಾಮ್ಷಿ, ಅಭಿನವ ಪ್ರಕಾಶನ, 2011

4. ಡಾ. ಮೊಗಳ್ಳಿ ಗಣೇಶ್, ದಲಿತಕಥನ, ಕನ್ನಡ ವಿಶ್ವವಿದ್ಯಾಲಯ, ಹಂಪಿ. 2006.

5. ಡಾ. ಸುಧಾ ಸೀತಾರಾಮನ್, ಮಹಿಳಾ ಅಧ್ಯಯನ, ಸ್ತ್ರೀಲೇಖ ಪ್ರಕಟಣೆ, ಸಮಾಜ ಶಾಸ್ತ್ರೀಯ ದೃಷ್ಟಿಕೋನ, 2010

6. ಡಾ. ಸುಧಾ ಸೀತಾರಾಮನ್, ಮಹಿಳಾ ಅಧ್ಯಯನ : ಸಮಾಜ ಶಾಸ್ತ್ರೀಯ ದೃಷ್ಟಿಕೋನ

7. ಡಾ.ಅರವಿಂದ ಮಾಲಗತ್ತಿ, ದಲಿತಮಾರ್ಗ (ಸಂ.) ಕನ್ನಡ ಪುಸ್ತಕ ಪ್ರಾಧಿಕಾರ, 2002

8. ಮೊಗಳ್ಳಿ ಗಣೇಶ್, ಅವ್ಯಕ್ತ ಚರಿತ್ರೆ, ಕನ್ನಡ ವಿಶ್ವವಿದ್ಯಾಲಯ, ಹಂಪಿ, 2005

9. The Bernad cohn omnibus, Author Bernad Cohn, oxford University Press, 2004

****

ಮಹಿಳಾ ಸಾಹಿತ್ಯ ಮತ್ತು ಅಭಿವ್ಯಕ್ತಿಯನ್ನು ಹೆಣ್ಣಿನದ್ದೇ ಆದ ಭಾಷಾ ಮತ್ತು ಅರ್ಥ ಪರಂಪರೆಯಲ್ಲಿ ಹೊಸದಾಗಿ ಓದುವ ಅಗತ್ಯವನ್ನು ಸಮಕಾಲೀನ ಜಗತ್ತು ಅರ್ಥಮಾಡಿಕೊಳ್ಳುತ್ತಿದೆ. ಹೆಣ್ಣಿನ ಭಾವಕೋಶ ಮತ್ತು ಅರ್ಥಕೋಶಗಳನ್ನು ಕುರಿತ ಜಾಣ ಕಿವುಡು ಮತ್ತು ಜಾಣ ಕುರುಡಿಗೆ ಚಿಕಿತ್ಸೆಯಾಗಿ ಕೂಡ ಈ ನಿಜ ಮತ್ತು ಮರು ಓದುಗಳು ಕೆಲಸ ಮಾಡಬೇಕು. ಹಾಗೆಂದು ಸಾಹಿತ್ಯದ 'ಸಾಚಾತನದ' ಪ್ರಶ್ನೆಗಳನ್ನು ಬದಿಗೊತ್ತಿ ಇವು ಕಾರ್ಯ ನಿರ್ವಹಿಸಬೇಕಾಗಿಲ್ಲ. ಆ ನೆಲೆಗಳನ್ನು ಒಪ್ಪುತ್ತಲೇ ಮಹಿಳಾ ಕಾವ್ಯ ಮೀಮಾಂಸೆಯೊಂದನ್ನು ರೂಪಿಸುವ ಮತ್ತು ಅದನ್ನು ಕಾವ್ಯಮೀಮಾಂಸೆಯ ಅಖಂಡ ಭಾಗವಾಗಿಸುವ ಸವಾಲನ್ನು ಈ ನಮ್ಮ ಕಾಲ ಬದ್ಧತೆ ಮತ್ತು ಘನತೆಯಿಂದ ನಿರ್ವಹಿಸಬೇಕಾಗಿದೆ. ಈ ಬಗೆಯ ಸಂಕಲನಗಳು ಈ ದೃಷ್ಟಿಯಿಂದ ಮುಖ್ಯ. ಅಂದಿನ, ಇಂದಿನ ಎಲ್ಲ ಲೇಖಕಿಯರನ್ನು ಮಾತ್ರವಲ್ಲ ಲೇಖಕರನ್ನೂ ಹೆಣ್ಣೋಟಕ್ಕೆ ಒಳಗು ಮಾಡಬೇಕಾಗಿದೆ. ಹೆಣ್ಣಿನ ಭಾಷೆಯನ್ನು ಲೋಕಕ್ಕೆ ಕಲಿಸುವ ದಾರಿಗಳಲ್ಲಿ ಇದೂ ಒಂದು ಮುಖ್ಯ ದಾರಿ.

–ಎಂ. ಎಸ್. ಆಶಾದೇವಿ
ಪ್ರಸಿದ್ಧ ವಿಮರ್ಶಕರು

ಅಧ್ಯಕ್ಷ
ಪ್ರಕಾಶನ

9 788196 993559

ಬೆಲೆ : ರೂ. 485/-

MALLESWARAM LADIES' ASSOCIATION

ACADEMY OF HIGHER LEARNING

Permanently Affiliated to Bengaluru City University & Accredited by NAAC

DEPARTMENT OF LANGUAGES

In Association with

ಕರ್ನಾಟಕ ಲೇಖಕಿಯರ ಸಂಘ (ರಿ) ಬೆಂಗಳೂರು

Organizes

ONE DAY NATIONAL LEVEL
MULTI LANGUAGE CONFERENCE ON

LANGUAGE AND IDENTITY

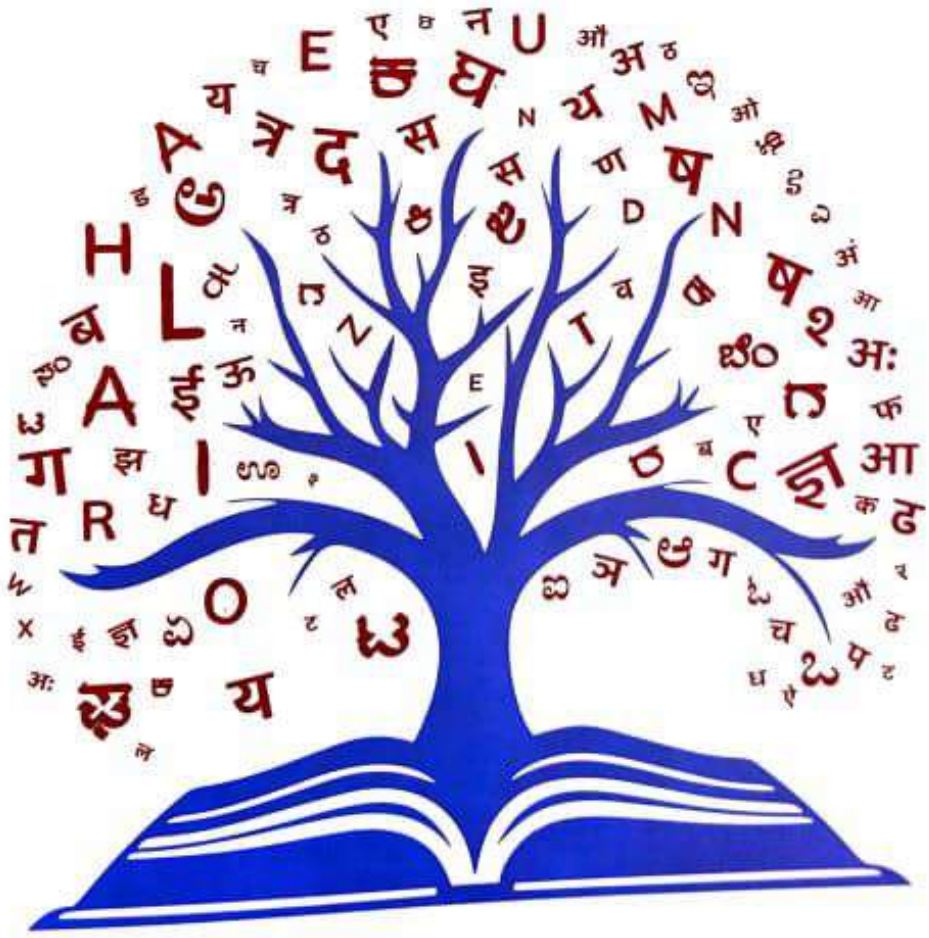

भाषा तदस्तित्वञ्च

हिंदी साहित्य में आंचलिकता की अवधारणा

Chief editor:

Dr. Padmaja P. V.

Principal,

MLA Academy of Higher Learning, 14th cross, Malleswaram, Bengaluru.

Editors:

Ms. Santoshi B. R., Ms. Indrita Chakraborty, & Mr. Prajwal G. V.

Department of English, MLA Academy of Higher Learning.

Dr. Kshithija

Department of Hindi, MLA Academy of Higher Learning.

Mr. Umesh H. G., & Dr. Dakshayini M.

Department of Kannada, MLA Academy of Higher Learning.

Mr. Mahesh Prakash Devate

Department of Sanskrit, MLA Academy of Higher Learning.

LANGUAGE AND IDENTITY

National Level Multilanguage Conference – 2024

Published by: MLA Academy of Higher Learning, Bengaluru.

Copyright – 2024 by MLA Academy of Higher Learning.

Views expressed in the articles are those of respective author(s). Neither MLA Academy of Higher Learning nor editor will accept any responsibility for views expressed by the author(s).

ISBN: 678-81-658760-8 -3

Edition: 2024

Unless authorized, no part of the material published in the proceedings manual may be reproduced or stored in a retrieval system or used for commercial and other purposes.

All rights reserved.

Designed and **Printed** by:

Srinivasa Raja Iyengar

Graphic Design & Web Design Consultant

Email: seenarpc@gmail.com

Phone: +91-7676665314

अनुक्रम सारिणी

क्रम संख्या	विषय	लेखक / लेखिका	पृष्ठ संख्या
1.	आंचलिक उपन्यास कार शैलेश मटियानी व्यक्तित्व और कृतित्व	ज्योत्सना सोनी आर्या	71
2.	विवेकी राय की आंचलिक कहानियाँ	डॉ. गगन कुमारी हलवार	76
3.	आंचलिक उपन्यास के मूल तत्व और रंगेय राघव के उपन्यास	डॉ. नागरत्ना	82
4.	मैत्रीय पुष्पा की कहानी "फैसला" में ग्राम्य जीवन	डॉ. क्षितिजा	88
5.	उपन्यास साहित्य में आंचलिकता	डॉ. दारा योगानंद	94
6.	तेलुगू लोक साहित्य तथा साहित्य में आंचलिकता का प्रभाव	डॉ. चिलुका पुष्पलता	102
7.	आंचलिकता की अवधारणा और हिंदी साहित्य इस	यूनुस अली	114
8.	राम काव्य में आंचलिकता	डॉ. बृजेन्द्र कुमार सिंह	121
9.	उपन्यास साहित्य में आंचलिकता	रंजिनी के. एस.	126
10.	अशोक वाजपेयी के काव्यों में आंचलिकता	रूबी कुमारी	132
11.	हिंदी के आंचलिक उपन्यास महत्व एवं विशेषताएं	डॉ. मुक्कप्पा राठौर	140
12.	शिवानी की आंचलिक कहानियाँ - एक अध्ययन	डॉ. कला ए.	144
13.	अंतिम दशक की दलित कहानियों में आंचलिकता	संगीता	151
14.	फणीश्वर नाथ रेणु के मैला आंचल में आंचलिकता	डॉ. प्रमोद नाग	157
15.	शिवानी की कहानियों में आंचलिकता	डॉ. राखी के शाह	162
16.	डॉ. मायानन्द मिश्र के उपन्यास 'माटी के लोग सोने की नैया' में ग्रामीण जीवन और आंचलिकता एक समीक्षा	डॉ. रंजीत कुमार	169
17.	समकालीन परिदृश्य, आंचलिकता और प्रगतिवादी कवि	अच्युत शुक्ला	182
18.	शंकर शेष के नाटकों में सामाजिक यथार्थ	डॉ. अनुपमा	188

अंतिम दशक की दलित कहानियों में आंचलिकता

श्रीमती संगीता
शोधार्थी
दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा,
धारवाड़, कर्नाटक

सारांश

हिंदी कहानी साहित्य में दलित जीवन के विमर्श की शुरुआत प्रमुखतः प्रेमचंद से मानना होगा | हिंदी कहानियों में प्रेमचंद ने समाज के उपेक्षित और शोषित जनता को साहित्य के सिंहासन पर प्रतिष्ठित ही नहीं किया ,वरन उनकी प्रमाणिक तस्वीर भी पेश की | वह उपेक्षितों के जबरदस्त पक्षधर भी बने | इस आलेख में दलित जीवन से संबंधित एवं उनके परिवेश के बारे में बताया गया है | दलित समाज में हमेशा ही निकृष्ट रहा है और उन्हें हमेशा तिरस्कृत ही रहना पड़ा है | वह चाहे कितना भी पढ़-लिख न जाए परन्तु उन्हें वह स्थान कभी नहीं मिला जो सवर्णों को मिला है | गरीबों और बेकसूरों के महत्व के आचार-विचार, भाषा- भाव ,रहन-सहन, आशा-आकांक्षा, सुख-दुःख और सूझबूझ जानना चाहते हैं तो प्रेमचंद से उत्तम परिचालक हमें नहीं मिल सकते | बेगार प्रथा ने दलितों की कमर तोड डाली थी | इस प्रथा के आधार पर जमींदार, पूंजीपति दलितों का शोषण करते थे |

दलित का सामान्य अर्थ है –शोषित, पीड़ित, सुविधाओं से वंचित पिछड़ा हुआ | समाज द्वारा जिसका दलन होता हो, समजा की नजरों में जिसका अस्तित्व न के बराबर हो, उसे दलित कहते हैं | दलित किसे माना जाए इस संबंध में दो प्रकार के मत हैं – संकुचित तथा व्यापक | संकुचित अर्थ धार्मिक ग्रंथ, सामाजिक व्यवस्था आदि के कारण है | जिसके अंतर्गत चतुर्थ वर्ण (शूद्र) में आने वाली जातियों को आधार बनाया जाता है | जबकि व्यापक अर्थ उन सभी के लिए शब्द प्रयोग में आता है, जिन्हें किसी-न-किसी प्रकार से दबाया गया हो ,फिर चाहे वे किसी भी जाति या संप्रदाय के हो |

भारत विभिन्न जन-जातियों का देश है | इसमें दलित समाज अपने स्थान बनाने के लिए आज भी प्रयास कर ही रहा है | मैत्रेयी पुष्पा की कहानी **'मन नाही दस बीस'** में जातीयता के नियम में चलते पिता का वर्णन मिलता है। प्रस्तुत कहानी में जातीयता की अपने समाज का, अपने जीवन का एक अपरिवर्तनशील नियम समझने वाले व्यक्ति और समाज का चित्रण है। परिणामस्वरूप अपनी कोख

से जन्मी कन्या को एक बाप के हाथों ही निडर व्यक्तित्व वाले मर्द से जातीयता के कारण नाता तोड़कर सवर्णता का दंभ भरने वाले समाज से बचने के लिए सवर्ण जाति के युवक से विवाह करता है। परन्तु कन्या का जीवन दुःखपूर्ण बन जाता है, क्योंकि वह व्यक्ति नामर्द था। अन्त में अपने दलित मित्र के सामने सच्चाई का इजहार करने वाली सवर्ण प्रेयसी का अत्यन्त सजीव चित्रण इस कहानी में मिलता है।

डॉ. जोतिष जोशी 'साहित्य में दलितवाद की प्रासंगिकता' इस लेख के अन्तर्गत अपने विचार प्रकट रकते हैं- "इसमें कोई दो राय नहीं है कि भारत में निम्न जातियों पर सदियों से अत्याचार होते आ रहे हैं। उनके शोषण और उत्पीड़न की लम्बी परम्परा है, जो प्रायः हर युग में चलती रही है। किसी भी जीवित समाज में इस बर्बरता को न्यायोचित नहीं ठहराया जा सकता।" इस विचार का प्रत्यक्ष उदाहरण है ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानी **'कूड़ाघर'**। प्रस्तुत कहानी में महानगरों में सुशिक्षित लोगों के मन में बैठी जाति प्रथा की मानसिकता को लेखक ने बड़े यथार्थ रूप से चित्रित किया है। कहानी का नायक अजब सिंह देहरादून से आरक्षण बचाव रैली में दिल्ली चले गए थे। परन्तु वहाँ से उन्हें निराश होकर लौटना पड़ा। उससे अधिक निराशा उन्हें तब हुई जब घर लौटकर पत्नी से इस बात का पता चला कि मकान मालिक डॉ. साहब ने घर खाली करने की सूचना दी है। अजब सिंह आश्चर्य में डूब गए। पत्नी सुमित्रा से वास्तविकता को पूछना चाहा। अचानक बात क्या हो गई? दो दिन पहले उनका रवैया अच्छा था। तब पत्नी सुमित्रा मालिक की कही बातों को दोहराती है-"मकान खाली कर दो...तुम लोगों ने मकान किराये पर लेते समय यह नहीं बताया था कि तुम लोग एस.सी. हो।" जब तक उनकी जाति का आभास नहीं हुआ था तब तक डॉ. साहब का परिवार उनके साथ घुल-मिलकर रह रहा था। जाति का पता लगते ही सब कुछ गड़बड़ा गया। इस तरह के माहौल से मानो सारा शहर ही एक 'कूड़ाघर' में बदल गया हो, जहाँ साँस लेना ही मुश्किल है। इस तरह शहर के सुशिक्षित वर्ग के मन में कुंडली मारकर बैठी जातीयता को लेखक ने सामने लाया है।

मोहनदास नैमिशराय की कहानी **'हारे हुए लोग'** में चेतराम कुरील पदोन्नति पाकर अपने शहर से नये शहर आए थे। पदोन्नति की खुशियों में कल्पना के गुलाबी पंखवाले रथ पर सवार होकर आए थे। पर यहाँ उनकी खुशियाँ टूटते देर नहीं लगी। नये शहर में जब ये किराये का मकान ढूँढने गए, वहाँ जाति के नाम पर उन्हें जो अपमानित होना पड़ा, वह इस सवर्ण समाज के दोहरे रंग का परिचय कराता है। चेतराम कुरील अपने परिचित के कहे अनुसार 'रामनारायण द्विवेदी विद्यावाचस्पती' के घर किराये का मकान पूछने चला जाता है। सामान्य परिचय के बाद रामनारायण द्विवेदीजी कहते हैं- "देखो जी! आप

हमारी जाति-बिरादरी के हो तो कमरा दिखाऊँ.... वरना...।" तब चैतराम कुरील आत्मविश्वास इकट्ठा करके जोर देकर कहता है कि वे ऑफिस में सेक्शन ऑफिसर हैं। तब मकान मालिक ने जवाब दिया- 'भाजी हमें क्या मतलब, आप कलट्टर भी हैं। नौकरी करने से आदमी की जाति तो नहीं बदल जाती। रहता तो वही है।"" इस घटना के बाद उन्हें एक और जगह शर्मा नामक सज्जन के घर में भी जाति के नाम से निराश होकर लौटना पड़ता है। इस तरह जाति के आगे आदमी को विद्या और उच्च पदों का भी कोई मूल्य नहीं, जाति को अपना सर्वस्व मानने वाले समाज को।

जाति प्रथा जैसी दुर्गंध को सवर्ण जाति के शिक्षित लोगों के अन्दर बैठी हुई भावना को उजागर करने वाली मोहनदास नैमिशराय की **'नया पड़ोसी'** कहानी भी एक है। प्रस्तुत कहानी में समाज जाति के कारण किस तरह अमानवीय व्यवहार करता है इस बात का वर्णन है। इस पर सोचा जाए तो मन में एक सवाल उठता है कि इंसान किसे कहे? सवर्ण समाज दलितों के प्रति ऐसा व्यवहार करता है कि वह उसे मनुष्य प्राणी मानने को तैयार ही नहीं है। सवर्णों की आँखों से वह रोशनी भी गायब हो गई है, जिससे वह दलित जनता को आत्मीयता से देख भी नहीं सकते। इस बात का स्पष्टीकरण उपर्युक्त कहानी में हुआ है।

भारत गाँवों का देश है। आज भी ग्रामीण जीवन अधिकतर कृषि व्यवस्था पर आधारित है। बड़ा अनौखापन लिए ग्रामीण जीवन भिन्न-भिन्न जातियों में विभक्त है।

यहाँ सबसे ऊपर ब्राह्मण एवं सबसे नीचे भंगी, चमार, चूहड़े हैं। स्वतंत्रता के बाद उसका औद्योगीकरण हुआ। सभी प्रकार के विकास होने के बावजूद गरीब अमीर के बीच खाई को कम करने की अपेक्षा उसे बढ़ाने का काम ही औद्योगीकरण ने अधिक किया है। इससे भारतीय जन बिखरा हुआ नजर आता है। यह भेद-भाव एवं जाति-प्रथा की बदबू ओमप्रकाश वाल्मीकि की **'सलाम'** कहानी में देखा जा सकता है। प्रस्तुत कहानी में हरीश (दलित) और कमल उपाध्याय (ब्राह्मण) ये दोनों खास मिजाजनी मित्र हैं। इनके मन में जाति का कोई मैल नहीं है, परन्तु कमल हरीश को जब अपने घर ले जाता है, तब उसकी माँ पूछती है-तुम्हारे पिताजी क्या करते हैं? हरीश कहता है-मेरे पिताजी नगरपालिका में सफाई कामगार हैं। जैसे ही हरीश की जाति का पता चला वैसे ही कमल की माँ ने कमल के गाल पर थप्पड़ दे मारा और कहा- "पता नहीं, कहाँ-कहाँ से इन कंजड़ों को पकड़कर घर ले आता है। खबरदार! जो आगे से किसी हरामी को यहाँ लाया... ।" हरीश के जाने के बाद मारा घर दोबारा धोया और

गंगाजल छिड़ककर जमीन पवित्र कर दो। इस प्रकार कहानी के ग्रामीण परिवेश में जाति-प्रथा आज भी विद्यमान है। इस कहानी का दूसरा पहलु यह है कि कमल प्रगतिशील ब्राह्मण युवक है। अपने एक मेरी सहपाठी मित्र की बारात में उत्तर प्रदेश के एक गाँव में चला जाता है। वहाँ उन्हें सुबह-सुबह चाय की तलब आती है और वह गाँव की चाय की दूकान पर पहुँच जाता है, चाय वाला उसे चाय देने की हाँ कह देता है, परन्तु जब उसकी बातों से जान लेता है कि वह चूहड़ों की बारात में आया है तो चाय देने से इंकार करता है। इस मुद्दे पर बात होते-होते विवाद में बदल जाती है । इस प्रकार की जाति भेद से उपजी हुई मानसिकता ग्रामीण परिवेश में बरकरार है।

सूरजपाल चौहान की **'छूत कर दिया'** कहानी में शिक्षा के क्षेत्र में उच्च पद पर पहुँचकर सुख वैभव को प्राप्त करने की क्षमता दलित युवक रखते हैं, परन्तु मनुवादी व्यवस्था में सर्वोपरि मानने वाले अपने सम्मान को कब और कैसे चोट पहुँचा देंगे यह कह देना बहुत कठिन है। प्रस्तुत कहानी में धन प्राप्ति के लालच में जहाँ ग्राम प्रधान ने बिहारीलाल केन (आई.ए.एस.) को गाँव का गौरव बताया। वहीं एक दूसरे को सवर्ण युवक ने 'अरे चमार के' क्या छूत करेगा? कहकर उसका घोर अपमान करता है। इस कहानी के माध्यम से लेखक ने दलित उच्च पदों पर आसीन हुए लोगों को कहानी में नायक बताया है। साथ ही उन्हें सचेत भी किया है कि मनुवादियों की बातों में आकर, अपना समय और परिश्रम से कमाया धन अवैज्ञानिक संस्कृति को बढ़ावा देने में न गंवाएँ, बल्कि अपने असहाय और लाचार भाई बहिनों का उद्धार करने में लगाएँ जो संकट की घड़ी में अपना साथ देते हैं ।

'प्राण-प्रतिष्ठा' कहानी में लेखक ने धर्म के ठेकेदारों की वास्तविकता तथा पुजारी के व्यवहार और बातों से तीर्थ, मंदिर, पूजा विधि सब पाखंड साबित किया है। "भला दूध और गंगाजल से भगवान की मूर्ति को धोने से क्या उसमें आकर भगवान बस जाएँगे...पुजारी ने धीमे स्वर में अपनी बात को जारी रखते कहा- "उस मूर्ति को हम लोग दूध गंगाजल आदि से धोकर इसलिए पवित्र करते हैं कि भगवान की मूर्ति को बनाने वाले अछूत व नीच जाति के लोग होते हैं। जाने किस-किस भंगी, कुम्हार या चमार के हाथ उस मूर्ति पर लगते हैं। बस, इसलिए उस मूर्ति को दूध और गंगाजल से धोकर पवित्र किया जाता है।" इस कथन से मानो कहानीकार ने मंदिर तथा धर्म के पाखंड से बचने का संदेश दिया है।

रमणिका गुप्ता की कहानी **'बहू-जुठाई'** में गाँव की परम्परा और नारी व्यथा के साथ समाज की परिवर्तनशीलता की बात कही गई है। दलित समाज अपने घर होते अन्याय को अपना भाग्य समझकर

कर्मफल समझकर अपमानों को झेलने के लिए अभिशप्त हैं। साथ ही मनुष्यता प्राप्त करने के लिए संघर्ष की कहानी है। गाँव की परम्परानुसार दलित घराने की बहू की डोली पहली रात जमींदार के घर जाती थी। उसे इस कहानी में परिवर्तन की दिशा दिखाई है। इसका एक ही कारण है शिक्षा । जीवन भर पशु तुल्य जूठन पर जीने वाले, जीवन भर 'जी हुजूर' कहते रहे समाज को शिक्षा ने सोच दी, संघर्ष ने विश्वास और संगठन ने ताकत। बहू-जुठाई में नारी व्यथा के साथ संघर्ष की कथा है।

बीसवीं सदी के अंतिम दशक का यह समय सामाजिक परिवर्तन का अनुपम युग है। इस दशक में दलितों के सामाजिक जीवन में बदलाव आया है। सूरजपाल चौहान की कहानी **'परिवर्तन की बात'** में एक ओर दलित उत्पीड़ा को दिखाया गया है तो दूसरी ओर दलितों द्वारा बेगार करने को दृढ़ता से मना करना और परम्परा से चली आ रही प्रथा के विरुद्ध आवाज उठाना है। कहानी के नायक 'किसना' और उसके सहयोगी के माध्यम से दलितों में आए सामाजिक परिवर्तन का चित्रण है। इनकी **'टिन्नू का पोता'** कहानी में प्यास से बेहाल हरिसिंह उनकी पत्नी कमला और बच्चे जब कुँए के पास पानी पीने आते हैं, तब बूढ़े किसान के जातीय दंश देने वाले शब्द सुनने पड़े और हरिसिंह की पत्नी कमला का स्वाभिमान जाग जाता है। वह अपमानित होकर पानी पीने से स्वयं और बच्चे को प्यासे रखना बेहतर समझती है । इनकी **'अंगूरी'** कहानी में दिन-रात परिश्रम करने वाली अंगूरी रूखा-सूखा खाकर किसी तरह जीवित रहती है। फिर भी अपनी अस्मिता के प्रति सजग है। अंगूरी के रूप पर गाँव का मुखिया पं. चन्द्रभान मोहित था । वह अपनी जान से खेलती रही पर उन दरिंदों के सामने कभी झुकी नहीं। "चल निकल यहाँ से, यदि जरा भी देरी लगाई तो अंतड़ियाँ निकालकर बाहर रख दूँगी पोंगा पंडित... मैं अहिल्या ना हूं, मैं अंगूरी हूँ अंगूरी।" इस कहानी के माध्यम से कहानीकार यह बताना चाहता है कि दलित महिला अपनी अस्मिता बचाने के लिए जान दे सकती है, पर वह नहीं कर सकती जो अहिल्या ने किया था।

उपसंहार - भारतीय समाज में 'दलित' समाज का अलग अपना अस्तित्व रहा है। अंतिम दशक की कहानियों में दलित मानव की वेदना, निरन्तर संघर्ष करते रहने की अनिवार्यता, सुविधाभोगी लोगों के प्रति उनकी विरोधी मुद्रा दिखाई देती है। प्रतिकूल नारकीय स्थिति में भी जीने की विवशता अपने मानवीय अधिकारों के प्रति आत्म सजगता पैदा हुई है। इसके पश्चात ये कहानियाँ तमाम प्रलोभनों का प्रतिकार एवं सभी समस्याओं का साहस के साथ सामना करने के लिए संघर्षरत हैं। अंतिम दशक की

कहानियाँ स्वाधीनता पूर्व की कहानियों से अलग हैं। सामाजिक परिदृश्य एवं परिवर्तन के साथ इन कहानियों का आशय विषय और शैलीगत परिवर्तन है। संक्षेप में इस दशक की कहानियों का स्थान विभिन्न परिवेश की ओर अधिक रहा है। सामान्य जन-जीवन इस काल की कहानियों का केन्द्रीय काष्ठ बना है। ये कहानियाँ वर्तमान भारतीय परिवेश की समस्त आशाओं तथा आकांक्षाओं का आकलन है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची:-

1. सूरजपाल चौहान –हैरी कब आएगा कहानी संग्रह – 1999
2. ओमप्रकाश वाल्मीकि –सलाम –2000
3. मोहनदास नैमिशराय –आवाजें कहानी-संग्रह – 1998
4. रमणिका गुप्ता – बहु-जूठाई -1998

MALLESWARAM LADIES' ASSOCIATION

9 DECADE OF EXCELLENCE IN EDUCATION:

Malleswaram Ladies' Association is a registered society striving for women empowerment through education. Started in 1927, this all women managed institution has completed 97 years. It has, under its umbrella 6 educational institutions from Kindergarten (KG) to Post graduation (PG).

ACADEMY OF HIGHER LEARNING

ACADEMY OF HIGHER LEARNING commenced its innings in August 2006 and is proudly completing its 17 years of existence. It offers various undergraduate & postgraduate programs. The governing council of the college has members from industry and academia. The college has a blend of young and experienced faculty members from leading corporate and academia.

We, at AHL believe in holistic development of students & hence all our efforts are directed towards building knowledge, skill, social, emotional, and value quotient in our students. Our efforts are directed towards bringing out the best in the students through good coaching; providing additional text books & learning materials for advanced learners for all the semester; giving scholarships based on merit and means; remedial and revision classes for slow learners and conducting periodical tests and examination for all the students. We nurture talents & encourage the students to participate in co-curricular & extra-curricular activities to enable the students to gain practical exposure of what they learn in the classroom. We arrange for Industrial Visits, Internships, and Guest lectures from experts working in the Corporate Sector. The Placement Cell helps the students in acquiring relevant life skills & takes care of on campus & off-campus recruitments.

ISBN: 978-81-958790-8 - 3